Geography of India and the World
भारत एवं विश्व का भूगोल

Part - A
2 MARKS

2021

1. **मेसोजोइक युग की समय सीमा लिखिए।**
Write the time frame of Mesozoic Era.

उ. मेसोजोइक कल्प की समय सीमा 22.5 करोड़ से 7 करोड़ वर्ष पूर्व तक है। इसके काल को तीन कालों में विभाजित किया गया है –
(1) ट्रिआसिक काल (2) जुरासिक काल
(3) क्रिटैसियस काल

2. **सियाल की संरचना के बारे में लिखिए।**
Write about the structure of SiAl.

उ. पृथ्वी की बाहरी परत जिस पर महाद्वीप तथा महासागर स्थित है, भूपटल कहलाता है। इसकी रचना सियाल एवं सीमा पदार्थों से हुई है।
- इस परत में सिलिका (Silica-Si) एवं एल्युमिनियम (Al) की प्रधानता होती है। इसलिए इस परत को सियाल (si+al = sial) कहा जाता है। इसका औसत घनत्व 2.9 व औसत गहराई 50 से 300 कि. मी. है।

3. **शिवालिक हिमालय का निर्माण कैसे हुआ?**
How was the Shivalik Himalaya formed?

उ. शिवालिक हिमालय का निर्माण प्लायोसीन काल में प्रायद्वीपीय भाग के बीच स्थित जलपूर्ण द्रोणी टेथिस भू-सन्नति में अवसा**दों** के जमाव से हुआ।

4. **पश्चिमी घाट की पर्वत श्रेणियों/पहाड़ियों के नाम लिखिए।**
Name the mountain ranges/hills of Western Ghats.

उ. **सह्यद्रि को तीन वर्गों में विभक्त किया जाता है-**
1. उत्तरी सह्यद्रि 2. मध्य सह्यद्रि 3. दक्षिण सह्यादि।
- इनमें विभिन्न पहाड़ियाँ गिर पहाड़ी, बारदा पहाड़ी, मांडव पहाड़ी, नीलगिरी, अन्नामलाई, अनाईमुडी, कार्डमम पर्वत स्थित है। अनाईमुडी संपूर्ण दक्षिणी भारत की सबसे ऊँची चोटी है, जिसकी ऊँचाई 2,695 मीटर है। दोदा बेट्टा दूसरी सबसे ऊँची चोटी है।

5. **राजस्थान के जस्ता उत्पादक क्षेत्रों का उल्लेख कीजिए।**
Mention the zinc producing areas of Rajasthan.

उ. **राजस्थान के जस्ता उत्पादक क्षेत्र निम्नलिखित हैं –**
जावर (उदयपुर), रामपुर आगूचा (भीलवाड़ा), देबारी (उदयपुर), रामपुरा दरीबा (राजसमंद), चौथ का बरवाड़ा (सवाई माधोपुर)।

2018

1. **विश्व में चार पर्वत निर्माणकारी घटनाओं तथा उनके मुख्य पर्वतों के नाम बताइए?**
Name four orogenies and their main mountain formations in the world.

उ.

पर्वत निर्माणकारी घटना	उदाहरण
1. प्रीकैम्ब्रियन पर्वतीकरण	स्कैण्डिनेवियन पर्वत
2. कैलिडोनियन पर्वतीकरण	अरावली तथा सतपुड़ा पर्वत
3. हर्सीनियन पर्वतीकरण	अल्पेशियन पर्वत
4. अल्पाइन पर्वतीकरण	रॉकी, एंडीज और हिमालय।

2. **छोटा नागपुर पठार का क्या महत्त्व है?**
What is the significance of Chota Nagpur plateau?

उ. छोटा नागपुर पठार में कोयला, बॉक्साइट, लौह अयस्क, अभ्रक, मैंगनीज, फास्फेट, डोलोमाइट, चूना पत्थर इत्यादि। खनिजों के साथ ही विविध प्रकार के वनोत्पाद (रेशम, लाख, तेंदू पत्ता) भी प्राप्त होते हैं।

3. **राजस्थान में सौर ऊर्जा हेतु कौन सी उपयुक्त दशाएँ पाई जाती है?**
What are the suitable conditions prevailing in Rajasthan for solar energy?

उ. राजस्थान में सौर ऊर्जा हेतु उपयुक्त दशाएँ निम्नलिखित हैं-
(1) वर्ष के लगभग 300 दिन सूर्य का प्रकाश प्राप्त होता है।
(2) सौर ऊर्जा के लिए बहुत जमीन की आवश्यकता होती है, जो प्रदेश में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है।
(3) देश में सबसे अधिक सोलर रेडिएशन वाला प्रदेश।

4. **सोनाड़ी एवं मालवी पशुधन नस्लें राजस्थान के कौन से जिलों में पाई जाती हैं?**
Sonari and Malvi breeds of livestock are found in which districts of Rajasthan.

उ. सोनाड़ी (भेड़ की नस्ल) बाँसवाड़ा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डूँगरपुर, राजसमन्द व उदयपुर जिलों में पाई जाती है।
- मालवी (गाय की नस्ल) कोटा, झालावाड़, डूँगरपुर, बाँसवाड़ा व चित्तौड़गढ़ जिलों में पाई जाती है।

5. **राजस्थान के कोई आठ संरक्षित क्षेत्रों के नाम लिखिए?**
Name any eight conservation sites of Rajasthan.

उ. (1) गुढ़ा विश्नोई संरक्षित क्षेत्र, जोधपुर
(2) जोहड़ बीड़ संरक्षित क्षेत्र, बीकानेर
(3) रोटू संरक्षित क्षेत्र, नागौर
(4) जवाई बांध संरक्षित क्षेत्र, पाली
(5) बिलासपुर संरक्षित क्षेत्र, टोंक
(6) सुन्धामाता संरक्षित क्षेत्र, जालौर
(7) मनसा माता संरक्षित क्षेत्र, झुंझुनू
(8) शाकम्भरी संरक्षित क्षेत्र, सीकर-झुंझुनू।

2016

1. **उल्का झीलें क्या हैं?**
What are Meteor Lakes?

उ. **उल्का झीलें–** जिन झीलों का निर्माण उल्का पिण्डों के पृथ्वी से टकराने के कारण हुआ है, उल्का झीलें कहलाती है। जैसे– लोनार झील (महाराष्ट्र), टोवा झील (इण्डोनेशिया)। लोनार झील को वर्ष 2020 में रामसर साइट में शामिल किया गया था।

2. **अधिकेन्द्र क्या है?**
What is epicenter?

उ. **अधिकेन्द्र–** धरातल पर स्थित वह बिन्दु जहाँ पर सर्वप्रथम भूकम्पीय तरंगें पहुँचती हैं, उसे हम अधिकेन्द्र कहते हैं। यह पृथ्वी की सतह पर उद्गम केन्द्र के ठीक ऊपर का बिन्दु है।

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

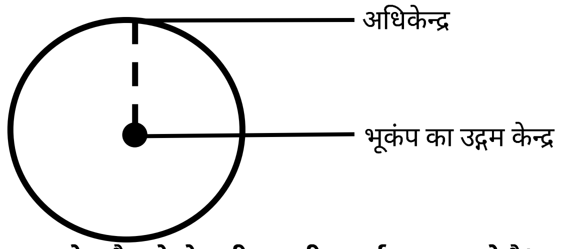

3. भारत के कौन से क्षेत्र शीतकालीन वर्षा प्राप्त करते है?
Which regions of India receive winter rainfall?

उ. भारत के शीतकालीन वर्षा प्राप्त करने वाले क्षेत्र -
(i) **तमिलनाडु–** उत्तरी–पूर्वी व्यापारिक पवनें भूमध्य रेखा की तरफ चलती है तथा बंगाल की खाड़ी से आर्द्रता ग्रहण कर तमिलनाडु में वर्षा करती है।
(ii) राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और दिल्ली में पश्चिम विक्षोभ के कारण वर्षा होती है, जिसे मावठ कहते हैं।

4. राजस्थान के मुख्य अधात्विक खनिजों के नाम लिखिए।
Name the main non-metallic minerals of Rajasthan.

उ. राजस्थान के मुख्य अधात्विक खनिज–
एस्बेस्टॉस, फेल्सपार, अभ्रक, डोलामाइट, यूरेनियम, लिथियम, पन्ना, तामड़ा, हीरा, बोराइट, जिप्सम, रॉक फास्फेट, संगमरमर, ग्रेनाइट, मुल्तानी मिट्टी, चीनी मिट्टी, माइका, बॉल क्ले, ग्रेनाइट, लाईम स्टोन, पोटाश आदि।

5. वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में पुरुष एवं स्त्री साक्षरता की दरें क्या हैं?
What are the male and female literacy rates in Rajasthan according to the 2011 census?

उ. राजस्थान में जनगणना 2011 के अनुसार
(i) पुरुष साक्षरता दर – 73.2%
(ii) महिला साक्षरता दर – 52.1%
(iii) राजस्थान की कुल साक्षरता – 66.1%
(iv) सर्वाधिक पुरुष साक्षरता वाला जिला – 86.3% (झुन्झुनू)
(v) सर्वाधिक महिला साक्षरता वाला जिला – 65.9% (कोटा)
(vi) न्यूनतम पुरुष साक्षरता वाला जिला – 69.5% (प्रतापगढ़)
(vii) न्यूनतम महिला साक्षरता वाला जिला– 38.5% (जालौर)

2016 Special mains

1. 'सिण्डर शंकु' ज्वालामुखी क्या है?
What is a 'Cinder Cone' Volcano?

उ. सिण्डर शंकु ज्वालामुखी- आग्नेय या ज्वलनशील प्रकार की स्थलाकृति है। ये ज्वालामुखी आकार में छोटे होते हैं। इनके अन्दर बहुत अधिक मात्रा में राख एवं नाममात्र लावा मौजूद होता है, इनका ढलान तीव्र होता है एवं ऊपर की तरफ एक गड्डा रहता है।
उदाहरण - मैक्सिको को पैराक्युटिन पर्वत तथा जोरल्लो पर्वत।

2. 'मेसा' को परिभाषित कीजिए।
Define 'MESA'.

उ. मेसा – अलग-अलग चौड़े सपाट-शीर्ष वाली पहाड़ी, जो मेसा (एक सपाट शिखर का) निर्माण करती है। यू.एस.ए. के विभिन्न राज्यों में मेसा भू-स्थलाकृति देखने को मिलती है। मरुस्थल में ऐसी आकृतियाँ ज्यादा पाई जाती है।
उदाहरण – कोलोराडो, न्यू मेक्सिको, यूटा, एरिजोना।

3 सह्याद्रि कहाँ हैं?
Where are the Sahyadris?

उ. भारत के पश्चिमी तट पर स्थित पर्वत श्रृंखला को पश्चिमी घाट या सह्याद्रि कहते है।
- यह दक्कन का पठार के पश्चिमी किनारे पर स्थित है, इसकी लम्बाई लगभग 1600 km हैं। यह जैवविविधता की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। यह विश्व के हॉटस्पॉट स्थलों में सम्मिलित है।

4. 'वालरा' से आपका क्या आश्य है?
What do you mean by 'Walra'?

उ. वालरा- एक प्रकार की झूमिंग कृषि है, इस कृषि में वृक्षों को जलाकर उसकी राख को खाद के रूप में प्रयोग किया जाता हैं वालरा कृषि दो प्रकार की होती है –
1. **चिमाता-** पहाड़ी क्षेत्रों में की जाती है।
2. **दजिया-** यह मैदानी क्षेत्रों में की जाती है। यह मुख्यत: भील जनजाति द्वारा की जाती है। इससे पर्यावरण को नुकसान पहुँचता है।

5. 'वलित पर्वत' क्या हैं? वलित पर्वतों के कुछ उदाहरण उनकी अवस्थिति के साथ दीजिए।
What are 'Fold Mountains'? Give some examples of fold mountains with their location.

उ. वलित पर्वत- पृथ्वी के भीतर उत्पन्न सम्पीडनात्मक बल से धरातलीय चटटानों में वलन या मोड़ पड़ने से इन पर्वतों का निर्माण होता है। सम्पीडन शक्ति से मुड़कर उठे भाग को अपनति तथा नीचे धंसे भाग को अभिनति कहा जाता है। तीव्रगामी भूगर्भिक हलचलें इन अभिनतियों और अपनतियों के मोड़ों को ऊँचा उठा देती है, एवं कालान्तर में वलित पर्वतों का उत्थान हो जाता है।
उदाहरण–
- हिमालय पर्वतमाला– उत्तरी भारत
- एंडीज पर्वत– दक्षिण अमेरिका के पश्चिमी क्षेत्र में
- यूराल पर्वत– रूस में
- भारत की अरावली श्रृंखला विश्व की सबसे पुरानी वलित पर्वत श्रृंखला है।

2023

1. Write names of any 6 deserts found in Australia.
ऑस्ट्रेलिया के किन्हीं 6 मरुस्थलों के नाम लिखिए।

उत्तर- ऑस्ट्रेलिया 6 मरुस्थल :-
(1) ग्रेट विक्टोरिया मरुस्थल-
(2) ग्रेट सैण्डी मरुस्थल-
(3) तनामी डेजर्ट
(4) सिम्पसन डेजर्ट
(5) गिब्सन मरुस्थल-
(6) स्टुर्ट स्टोनी डेजर्ट

2. Name any eight tributaries of river Krishna.
कृष्णा नदी की किन्हीं आठ सहायक नदियों के नाम लिखिए।

उत्तर- कृष्णा नदी की प्रमुख आठ सहायक नदियाँ:-
(1) घाटप्रभा
(2) तुंगभद्रा
(3) भीमा
(4) मालप्रभा
(5) मुसी
(6) कोयना
(7) दुध गंगा
(8) मुनेरु

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

3. **Mark the following places in the given outline map of India:**
(a) Thal Ghat (b) Pal Ghat
(c) Nathu La (d) Shipki La
भारत में दिये गये रेखा-मानचित्र पर निम्न स्थानों को चिह्नित कीजिए:
(a) थाल घाट (b) पाल घाट
(c) नाथू ला (d) शिपकी ला

उत्तर-

4. **Sabarmati river flows in which districtsof Rajasthan? Nameits tributaries.**
राजस्थान के किन जिलों में साबरमती नदी प्रवाहित होती है? इसकी सहायक नदियों के नाम लिखिए।

उत्तर- साबरमती मुख्यतः उदयपुर, सिरोही में प्रवाहित है। सहायक नदियाँ – मानसी, वाकल, माजम, वेतरक, सेई, हथमति, मेश्वा है

5. **Name the major rock phosphate producing areas of Rajasthan and mention its use.**
राजस्थान के प्रमुख रॉक फॉस्फेट उत्पादक क्षेत्रों के नाम दीजिए और इसका उपयोग बताइए।

उत्तर- यह राजस्थान में सर्वाधिक उत्पादन वाला खनिज (अधात्विक खनिज) है।

- भारत में रॉक-फॉस्फेट की सबसे बड़ी खान झामर कोटड़ा (उदयपुर) है।
- रॉक-फॉस्फेट का प्रयोग मिट्टी की अम्लीयता/लवणीयता की समस्या के समाधान हेतु किया जाता है।
  रॉक-फास्फेट रासायनिक खाद बनाने व लवणीय भूमि के उपचार हेतु प्रयुक्त होता है।
- उदयपुर में रॉक-फॉस्फेट के भण्डार अरावली महासंघ की चट्टानों में हैं।
- **राजस्थान में रॉक-फॉस्फेट के उत्पादक क्षेत्र-**

1. **झामर कोटड़ा, धाकन कोटड़ा , मटून , कानपुर , कारबेरिया, डाफन कोटड़ा, सीसारमा, नीमच माता ,बड़ागाँव -** उदयपुर
2. **सलोपेट -** बाँसवाड़ा
3. **बिरमानिया, फतेहगढ़ -** जैसलमेर
4. **अड़ूका-अदवानी -** जयपुर
5. **करपुरा, अचरोल –** जयपुर

2024

1. **राजस्थान के दिए गए रेखा-मानचित्र पर निम्नलिखित संरक्षित क्षेत्रों को चिह्नित कीजिए :**

(A) सोरसन
(B) आखरगाँव
(C) गोगेलाव
(D) जोड़ बीड़ गाढ़ावाला

उत्तर-
- सोरसन- बारां
- आखरगाँव- अजमेर
- गोगेलाव -नागौर
- जोड़ बीड़ गाढ़ावाला - बीकानेर

2. **चित्तौड़गढ़ और कोटा के मध्य अवस्थित किन्हीं चार जलप्रपातों के नाम लिखिए।**

उत्तर-
- चित्तौड़गढ़ और कोटा के बीच स्थित चार जलप्रपात हैं: मेनाल जलप्रपात, गैपरनाथ जलप्रपात, पदझर जलप्रपात और भीमलत जलप्रपात।
- ये राजस्थान के चित्तौड़गढ़ और कोटा जिलों के आसपास की अरावली पर्वत श्रृंखला में स्थित हैं।

3. **दक्कन लावा पठार की 'मालनाड' और 'मैदान' भू-आकृतियों के मध्य अन्तर बताइये।**

उत्तर-
- **दक्कन लावा पठार की 'मालनाड' और 'मैदान' भू-आकृति - मुख्य अंतर**

विशेषता	**मालनाड (Malnad)**	**मैदान (Maidan)**
स्थान	पश्चिमी घाट के समीप, कर्नाटक का पश्चिमी, ऊँचा क्षेत्र	कर्नाटक का मध्य व पूर्वी, समतली भाग

ऊँचाई	ऊँचाई – 600 से 1200 मीटर तक	अधिकतर नीचला – 300 से 600 मीटर
भूमि संरचना	पर्वतीय, उभरी, घाटियाँ, गहरी नदियाँ	चौड़ी, समतल, पठारी, ऊँची-नीची ज़मीन
मृदा व वनस्पति	गहरी लाल मृदा, मुलायम मिट्टी, घने जंगल, सघन वर्षा	हल्की लाल/काली मृदा, खुला मैदान, कम वनस्पति
वर्षा	अत्यधिक मानसूनी वर्षा, आर्द्र (2500–4000 मिमी/वर्ष)	कम वर्षा, अपेक्षाकृत शुष्क (600–1000 मिमी)
जनसंख्या/खेती	कम जनसंख्या, वानिकी, काजू, कॉफी, मसाला उत्पादन	अधिक जनसंख्या, अनाज—धान, ज्वार, गेहूं, कपास
संरचना प्रकार	ज्वालामुखी पर्वत, पठारी शिखर	ज्वालामुखी पठार, खुले मैदान

4. **भारत के किन क्षेत्रों में वार्षिक वर्षापात की अधिकतम और न्यूनतम परिवर्तनशीलता मिलती है?**

उत्तर-

अधिकतम परिवर्तनशीलता-

– वार्षिक वर्षापात की अधिकतम परिवर्तनशीलता (50% से अधिक) उन क्षेत्रों में मिलती है जहाँ औसत वार्षिक वर्षा सबसे कम होती है।

– पश्चिमी राजस्थान, उत्तरी जम्मू और कश्मीर, आंतरिक दक्कन का पठार

न्यूनतम परिवर्तनशीलता-

– वार्षिक वर्षापात की न्यूनतम परिवर्तनशीलता (25% से कम) उन क्षेत्रों में मिलती है, जहाँ औसत वार्षिक वर्षा सबसे अधिक होती है। पश्चिमी घाट, उत्तर-पूर्वी भारत

5. **निम्नलिखित महाद्वीपों के सर्वोच्च पर्वत शिखरों के नाम बताइये :**
(A) उत्तरी अमेरिका
(B) दक्षिणी अमेरिका
(C) अफ्रीका
(D) ऑस्ट्रेलिया

उत्तर-

– (A) उत्तरी अमेरिका- डेनाली (Denali), /माउंट मैकिनले
– (B) दक्षिणी अमेरिका- अकोंकागुआ
– (C) अफ्रीका: माउंट- किलिमंजारो
– (D) ऑस्ट्रेलिया- माउंट कोसियस्ज़को(कोसियुस्को)

❑❑❑

Part - B
5 MARKS

2021

1. **ज्वालामुखी की परिप्रशांत मेखला का वर्णन कीजिए।**
Describe the Pacific belt of a volcano.

उ. **परिप्रशांत महासागर पेटी (मेखला)** - यह प्रशांत महासागर के चारों ओर फैली ज्वालामुखी पेटी है। इसमें जापान का फ्यूजीयामा, अमेरिका का शास्ता व रेनियर आदि ज्वालामुखी पर्वत स्थित है। यह अंटार्कटिका के एरबस पर्वत से शुरू होकर दक्षिण अमेरिका के एंडीज पर्वतमाला एवं उत्तरी अमेरिका के रॉकी पर्वत का अनुसरण करती है।

- इसके अलावा अलास्का, पूर्वी रूस, जापान, फिलीपींस आदि द्वीपों से होते हुए मध्य महाद्वीपीय पेटी में मिल जाती है। इस पेटी में सक्रिय, शांत, सुषुप्त तीनों ज्वालामुखी पा**ए** जाते है।

2. **रॉकी पर्वत श्रेणी की भौगोलिक विशेषताओं का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।**
Briefly describe the geographical features of the Rocky Mountain range.

उ. रॉकी पर्वत उत्तरी अमेरिका के पश्चिम भाग में स्थित है, जो उत्तर-दक्षिण दिशा में अलास्का से उत्तरी न्यूमैक्सिको तक फैला है। इस पर्वत श्रेणी की ऊँचाई लगभग 1000 फुट से 14500 **फुट** तक है। **इसकी** सर्वोच्च चोटी एल्बर्ट है।

- **भौगोलिक विशेषताएँ –**
  - रॉकी पर्वत श्रेणी अमेरिका की जलवायु को प्रभावित करता है क्योंकि यह पछुआ हवाओं को रोक लेता है।
  - इस पर्वत श्रेणी से अनेक नदियों का उद्गम होता है, जैसे – मिजूरी, रियोग्राड नदी, कोलंबिया आदि।
  - रॉकी पर्वत श्रेणी में सोना, चांदी, तांबा आदि बहुमूल्य धातु बहुतायत में पाए जाते है।
  - अलास्का रॉकीज वर्ष में अधिकांश समय घने बर्फ से ढके रहते है, जिसके कारण यहाँ अनेक हिम नदियों का उद्गम होता है।
  - इस पर्वत श्रेणी के उत्तरी एवं मध्य भाग में वनभूमि क्षेत्र अधिक होने के कारण पशु धन बहुतायत में पाए जाते हैं।

3. **भारत के उष्ण कटिबंधीय सदाबहार वनों की भौगोलिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए।**
Describe the geographical features of tropical evergreen forests of India.

उ. सदाबहार वन यह वन उन भागों में मिलते है, जहां औसत वर्षा 200 से.मी. से अधिक तथा वार्षिक औसत तापमान लगभग **22** से.मी. रहता है। भारत में अण्डमान निकोबार द्वीप समूह, पश्चिमी घाट, असम क्षेत्र में ऐसे वन अवस्थित है।

- **विशेषताएँ-**
  - ये मुख्यत: भूमध्य रेखा के पास पाए जाते है।
  - यहां जमीनी सतह पर ह्यूमस की मात्रा अत्याधिक है।
  - जैव विविधता व वनस्पति से भरपूर।
  - जंगल घने व बहुस्तरीय है।
  - लकड़ी टिकाऊ व कठोर।
  - रोजवुड, महोगनी, ऐनी, एबोनी जैसे पौधों की अधिकता
  - वनों में मसालों के बागानों के साथ अनेक औषधियुक्त पेड़-पौधों का स्थल।

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

- ये वन पारिस्थितिकी तंत्र में जीवन को बढ़ावा देने में मदद करते है।

4. राजस्थान के हाड़ौती पठार की भौतिक विशेषताओं की विवेचना कीजिए।
Discuss the physical features of Hadoti plateau of Rajasthan.

उ. यह पठार राजस्थान के दक्षिण पूर्व में स्थित है जिसका अक्षांशीय विस्तार 23°51 उत्तरी अक्षांश से 25°27 उत्तरी अक्षांश एवं 75°15 से 77°25 पूर्वी देशांतर के मध्य है।

- **भौतिक विशेषताएँ-**
  - हाड़ौती के पठार में ज्वालामुखी क्रिया से निकले लावा के विखण्डन से निर्मित काली मृदा का विस्तार है।
  - राजस्थान में अधिकांश नदियाँ हाड़ौती के पठार में प्रवाहित होती है, जिसमें चंबल नदी अपवाह तंत्र भी शामिल है। (राजस्थान का सबसे बड़ा अपवाह तंत्र)
  - राजस्थान में हाड़ौती का पठार दक्षिण-पश्चिम मानसून बंगाल की खाड़ी शाखा में प्रवेश करता है।
  - हाड़ौती के पठार में मुख्यत: सोयाबीन, धनिया, कपास, गन्ना आदि फसलों का उत्पादन होता है।
  - इस पठार में बलुआ पत्थर तथा एल्युमिनियम के भण्डार पाए जाते है।

5. राजस्थान के प्रमुख धात्विक खनिजों के वितरण की संक्षेप में विवेचना कीजिए।
Briefly discuss the distribution of major metallic minerals of Rajasthan.

उ.

धात्विक खनिज
→ **लौह**
→ **अलौह**

- **लौह धात्विक** – ऐसे खनिज जिनसे धातुएँ प्राप्त होती है, धात्विक खनिज कहलाते है, जैसे – लौह अयस्क मैंगनीज, टंगस्टन।
- **राजस्थान में लौह अयस्क क्षेत्र** – मोरीजा बानोला, नीमला राइसेला (दौसा), डाबला (झुंझुनू)।
- **मैंगनीज** – मैंगनीज के उत्पादन तथा भण्डारण की दृष्टि से राजस्थान का 8वाँ स्थान है। यह मुख्यत: राजस्थान के बाँसवाड़ा में लीलवाना, तलवाड़ा, काला खूँटा आदि क्षेत्रों में पाया जाता है, अन्य- नगेडिया – राजसमंद।
- **अलौह धात्विक** – ऐसे खनिज जिनमें लौह धातुएँ प्राप्त नहीं होती है, अलौह धात्विक खनिज कहलाते हैं, जैसे – सीसा-जस्ता, चाँदी। खेतड़ी सिंघाना (झुंझुनू), खो दरीबा (अलवर), बीदासर (बीकानेर) बन्ने वालो की ढाणी (सीकर), नाथा की नांगल (सीकर)।
- **सीसा- जस्ता** – जस्ता उत्पादन में राजस्थान का एकाधिकार है। रामपुरा-आगुचा (भीलवाड़ा), राजपुरा-दरीबा (राजसमंद), जावर खान (उदयपुर), गुढा किशोरीदास (अलवर)।
- **चाँदी** – (87% **भंडार राजस्थान में**) वितरण – जावर खान (उदयपुर), रामपुरा आगुचा (भीलवाड़ा)।
- **टंगस्टन** - डेगाना (नागौर), नानाकराब (पाली), वाल्दा (सिरोही)।
- **स्वर्ण** – आनंदपुर भूकिया (बांसवाड़ा), जगतपुरा भूकिया (बांसवाड़ा), पादरा की पाल (डूंगरपुर)।

2018

1. दरारी ज्वालामुखी उद्भेदन क्या है? विश्व में इनकी उपस्थिति के क्षेत्रों के बारे में बताइये।
What is fissure volcanic eruption? Give regions of its occurrence in the world.

उ. ज्वालामुखी उद्भेदन में जब लावा के साथ गैस व जलवाष्प की मात्रा कम होती है तो धरातल पर दरार आ जाती है, इसे दरारी ज्वालामुखी उद्भेदन कहते हैं। इसमें निकलने वाला क्षारीय प्रकृति का लावा धरातल में दरार होने तथा कम श्यानता के कारण शांत रूप में दूर तक बहकर कम ऊँचाई के ज्वालामुखी भू-दृश्यों का निर्माण करता है।

- भारत के दक्कन का पठार, ब्राजील का पराना पठार तथा कोलम्बिया का पठार इन भू-दृश्यों के प्रमुख उदाहरण हैं। हवाई द्वीप का मोनालोआ ज्वालामुखी दरारी उद्भेदन वाला ज्वालामुखी है।

2. भारत में सन् 1901 से 2011 के बीच की जनसंख्या वृद्धि के विशिष्ट प्रावस्थाओं का वर्णन कीजिए।
Describe the distinct phases of population growth in India from 1901 to 2011.

उ. **(1) मंद वृद्धि का काल (1901-1921)-** भीषण अकाल, महामारी, अन्नाभाव, प्रथम विश्वयुद्ध के कारण उच्च मृत्युदर। जनसंख्या 0.27प्रतिशत प्रतिवर्ष से बढ़ी।

(2) स्थिर वृद्धि का काल (1921-1951)- वर्ष 1921 एक महान जनांकिकीय विभाजक है, क्योंकि इसके बाद जनसंख्या में निरंतर वृद्धि। इस काल में 1.45 प्रतिशत वृद्धि दर रही। मृत्युदर में कमी आई।

(3) तीव्र वृद्धि का काल (1951-81)- वर्ष 1951 के बाद जनसंख्या में तीव्र वृद्धि प्रारम्भ हुई। इस काल की औसत वृद्धि दर 2.2 प्रतिशत रही। वर्ष 1961 से 1971 के मध्य सर्वाधिक (24.8%) वृद्धि दर्ज की गई। स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार व तीव्र विकास कार्य प्रमुख कारण रहे।

(4) घटती वृद्धि का काल (1981-2011) - परिवार नियोजन कार्यक्रम व छोटे परिवार अपनाने की प्रेरणा के कारण जनसंख्या में उच्च वृद्धि की प्रवृत्ति जारी रहते हुए भी वृद्धि दर में क्रमिक ह्रास दृष्टिगोचर हो रहा है।

3. राजस्थान में मक्का उत्पादन के लिए उपयुक्त दशाओं तथा इसके प्रमुख उत्पादन क्षेत्रों को स्पष्ट कीजिए।
Explain suitable production conditions of Maize and its main production areas in Rajasthan.

उ. मक्का एक अर्द्ध शुष्क जलवायु की खरीफ फसल है, जिसके लिए कम से कम 50 से.मी. वर्षा तथा 21°C से 27°C का औसत तापमान आवश्यक है। रात्रि के समय औसत तापमान 14°C से कम नहीं होना चाहिए। साथ ही बलुई दोमट मिट्टी की आवश्यकता होती है, जिसमें वर्षा जल अधिक समय तक न ठहरे।

- राजस्थान में उपर्युक्त दशाएँ मेवाड़ क्षेत्र व दक्षिणी राजस्थान में पाई जाती है। जिसके तहत् उदयपुर, चित्तौड़गढ़ (राज्य में सर्वाधिक), बाँसवाड़ा व डूँगरपुर जिलों में इसका उत्पादन होता है। इनके

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

अतिरिक्त पाली, बूँदी, जयपुर व झालावाड़ में भी मक्का की खेती होती है। बाँसवाड़ा रबी मक्का के उत्पादन में प्रथम है।

4. राजस्थान में सीमेंट उद्योग की अवस्थिति के कारकों एवं वृद्धि की व्याख्या कीजिए।
Elucidate location factors and growth of cement industry in Rajasthan.

उ. सीमेंट उद्योग एक आधारभूत किन्तु वजन ह्रास उद्योग है, अत: इसका स्थानीयकरण कच्चे माल के क्षेत्र में होता है। कोयला, चूना पत्थर एवं जिप्सम इसके प्रमुख कच्चे माल हैं। सीमेंट में प्रयुक्त 60 से 65 प्रतिशत कच्चा माल चूना होता है।

- राजस्थान, सीमेंट ग्रेड के चूना पत्थर के उत्पादन में एक अग्रणी राज्य है। इसके साथ ही देश में राजस्थान जिप्सम उत्पादन में प्रथम स्थान पर है। इन दोनों कारकों ने राज्य में सीमेंट उद्योग को अवस्थित किया है। 60 से 65% कच्चा माल चूना पत्थर होने के कारण सीमेंट उद्योग उन्हीं क्षेत्रों में अधिक विकसित हुआ है, जहाँ चूना पत्थर बहुतायत में है।
  राजस्थान में चित्तौड़गढ़, लाखेरी (बून्दी), नागौर, अजमेर, सिरोही, जैसलमेर आदि जिलों में सीमेंट उद्योग अवस्थित हैं।

5. शेखावाटी प्रदेश की मुख्य भौतिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
Describe the main physical characteristics of Shekhawati region.

उ. बांगर प्रदेश के नाम से विख्यात यह क्षेत्र आंतरिक जल प्रवाह का क्षेत्र है। इसके अंतर्गत चूरू, झुंझुनू, सीकर व नागौर का उत्तरी भाग सम्मिलित है। इसकी मुख्य भौतिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

- इसके पूर्व में अरावली श्रेणी, उत्तर में घग्घर का मैदान व पश्चिम में 25 से.मी. समवर्षा रेखा है।
- यहाँ अधिकांशत: बरखान प्रकार के बालुका स्तूप पाए जाते हैं।
- यहाँ एक मात्र मौसमी नदी कान्तली है।
- डेगाना, सुजानगढ़, तालछापर, परिहारा, कुचामन आदि महत्त्वपूर्ण नमकीन पानी के गर्त (रन) हैं।
- यहाँ खोदे गए स्थानीय कुओं को 'जोहड़' या 'नाड़ा' कहते हैं।
- सांभर झील आंतरिक जल प्रवाह का उत्तम उदाहरण है।

2016

1. उत्तरी अमेरिका की महान झीलों की अवस्थिति, नाम एवं महत्त्व को संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।
Briefly explain the location, name and importance of the Great Lakes of North America.

उ. उत्तरी अमेरिका की महान झीलें–
अमेरिका व कनाडा की सीमा पर अवस्थित है, यह झीलें विश्व का सतही जल का 21% हिस्सा रखते हैं। सुपीरियर झील विश्व की सबसे बड़ी मीठे पानी की झील है। नियाग्रा जल प्रपात ईरी एवं ऑटोरियो झील के मध्य स्थित है। ऑन्टोरियो झील से सेन्ट लॉरेन्स नदी निकलती है। ग्रेट लेक्स क्षेत्र में अमेरिका के आठ राज्य तथा कनाडा का ऑटोरियो प्रान्त शामिल है।
पाँच महान झीलें निम्नलिखित है–
(i) लेक सुपीरियर (ii) मिशिगन
(iii) ईरी (iv) ऑटोरियो
(v) ह्युरोन

2. भारत की 'Bshw' प्रकार की जलवायु को स्पष्ट कीजिए।
Explain the 'Bshw' type of climate in India.

उ. कॉपेन की जलवायु का Bshw की विशेषता, इसे अर्द्धशुष्क स्टेपी जलवायु भी कहते है।

- **वर्षा–** ग्रीष्मकाल में 50–60 सेमी. शीतकाल में वर्षा का अभाव।
- **तापमान–** शीतकाल में 18°C से ऊपर, ग्रीष्मकाल में 45°C अधिक।
- **वनस्पति–** स्टेपी
  उदाहरण– कांटेदार झाड़ियाँ

B – एरिड
s – समर ड्राइ
h – हॉट
w – विंटर ड्राइ

3. भारतीय मानसून पर ला–नीनो के प्रभाव को स्पष्ट कीजिए।
Explain the effect of La Nina on Indian monsoon.

उ. ला–नीनो – स्पेनिश शब्द अर्थ – 'द लिटिल गर्ल' यह अल–नीनो के विपरीत प्रभाव दर्शाता है। ला-नीनो के अन्तर्गत दक्षिण अमेरिका के पश्चिम भाग में ठण्डी जल धारा के आने से उच्च दाब की स्थिति उत्पन्न होती है। इसके विपरीत ऑस्ट्रेलिया व भारत में निम्न दाब की स्थिति उत्पन्न होती है।

- **भारत के मानसून प्रभाव–** अल–नीनो के विपरीत ला–नीनो के समय भारत में अच्छी वर्षा होती है। सामान्यत: भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए लाभदायक है, जो कृषि एवं उद्योग के लिए मानसून पर निर्भर है। सामान्य से अधिक सर्दी पड़ती है।

4. राजस्थान में इमारती पत्थरों के प्रकार एवं वितरण को संक्षेप में समझाइए।
Briefly explain the types and distribution of building stones in Rajasthan.

उ. राजस्थान में इमारती पत्थरों के प्रकार एवं वितरण–
इमारती पत्थर के उत्पादन में राजस्थान प्रथम स्थान पर है तथा राज्य में सर्वाधिक इमारती पत्थर का भण्डारण जोधपुर में है।

क्र.सं.	पत्थर का प्रकार	वितरण
1.	बादामी पत्थर	धडिया एवं गुमानपुरा क्षेत्र (जोधपुर)
2.	गुलाबी पत्थर	भरतपुर
3.	काला पत्थर या घीया पत्थर	डूँगरपुर
4.	स्लेटी पत्थर	अलवर
5.	गेरू पत्थर	चित्तौड़गढ़
6.	कोटा स्टोन	कोटा
7.	लाल पत्थर	धौलपुर, करौली
8.	महरून पत्थर	करौली
9.	पीला पत्थर	जैसलमेर (जजिया गाँव)
10.	ग्रेनाइट	कोराणा (जालौर)

5. राजस्थान में लिग्नाइट कोयला के वितरण एवं औद्योगिक उपयोग के बारे में लिखिए।
Write about the distribution and industrial use of lignite coal in Rajasthan.

उ. लिग्नाइट कोयला– यह तृतीय महाकल्प का कोयला है।

- **विशेषताएँ–** यह जलाने पर धुँआ ज्यादा एवं ऊर्जा कम देता है।
- **राजस्थान में लिग्नाइट कोयले का विवरण–**

राजस्थान में लिग्नाइट प्रकार का कोयला पश्चिम राजस्थान में पाया जाता है। इसका भण्डार 105 करोड़ टन है तथा राजस्थान भण्डार के मामलें में दूसरे स्थान पर है।

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

- **बाड़मेर–** कपूरड़ी (सर्वाधिक मात्रा), जालिपा, गिरल।
- **बीकानेर–** पलाना (सर्वाधिक उत्तम किस्म), गुरहा, बिठनोक, नापासर, बरसिंगपुर, मुंथ।
- **नागौर–** इन्दावर, कस्नाऊ।
- **औद्योगिक उपयोग–** ताप बिजलीघर, कारखाने, ईंट के भट्टों।
- **परियोजनाएँ –** बरसिंहसर (बीकानेर), पलाना (बीकानेर) कपूरड़ी, गिरल (बाड़मेर)।

2016 Special mains

1. **'वलित पर्वत' क्या हैं? वलित पर्वतों के कुछ उदाहरण उनकी अवस्थिति के साथ दीजिए।**
What are 'Fold Mountains'? Give some examples of fold mountains with their location.

उ. **वलित पर्वत-** पृथ्वी के भीतर उत्पन्न सम्पीडनात्मक बल से धरातलीय चट्टानों में वलन या मोड़ पड़ने से इन पर्वतों का निर्माण होता है। सम्पीडन शक्ति से मुड़कर उठे भाग को अपनति तथा नीचे धंसे भाग को अभिनति कहा जाता है। तीव्रगामी भूगर्भिक हलचलें इन अभिनतियों और अपनतियों के मोड़ों को ऊँचा उठा देती है, एवं कालान्तर में वलित पर्वतों का उत्थान हो जाता है।

उदाहरण–
- हिमालय पर्वतमाला– उत्तरी भारत।
- एंडीज पर्वत– दक्षिण अमेरिका के पश्चिमी क्षेत्र में।
- यूराल पर्वत– रूस में।
- भारत की अरावली श्रृंखला विश्व की सबसे पुरानी वलित पर्वत श्रृंखला है।

2. **भूगर्भित समय सारणी के मध्यजीवी महाकल्प की विशेषताओं की विवेचना कीजिए।**
Discuss the characteristics of the medieval era of the geological time table.

उ.

भूगर्भिक समय सारणी के मध्यजीवी महाकल्प की विशेषता-

महा कल्प	कल्प	आयु	मुख्य घटक
मध्यजीवी (मिसोजोइक) 6.5-24.5 करोड़ वर्ष	क्रिटेशियस जुरेसिक ट्रियासिक	6.5-14.4 करोड़ 14.4-20.8 करोड़ 20.8-24.5 करोड़	डायनासोर विलुप्त डायनासोर युग मेंढ़क समुद्री कछुआ

3. **भारत में जनसंख्या वृद्धि के वर्ष 1900 से अब तक के रुझानों/ परिवर्तनों को वर्णित कीजिए।**
Describe the trends/changes of population growth in India from 1900 till date.

उ. भारत में जनसंख्या वृद्धि को निम्नलिखित चरणों में विभक्त कर सकते हैं -
- **मंद वृद्धि का काल (1901-1921)-** भीषण अकाल, महामारी, अन्नाभाव, प्रथम विश्वयुद्ध के कारण उच्च मृत्यु दर। जनसंख्या 0.27 प्रतिशत प्रतिवर्ष से बढ़ी।
- **स्थिर वृद्धि का काल (1921-1951)-** वर्ष 1921 एक महान जनांकिकीय विभाजक है, क्योंकि इसके बाद जनसंख्या में निरंतर वृद्धि हुई। इस काल में 1.45 प्रतिशत वृद्धि दर रही। मृत्युदर में कमी आई।
- **तीव्र वृद्धि का काल (1951-81)-** वर्ष 1951 के बाद जनसंख्या में तीव्र वृद्धि प्रारम्भ हुई। इस काल की औसत वृद्धि दर 2.2 प्रतिशत रही। वर्ष 1961 से 1971 के मध्य सर्वाधिक (24.8%) वृद्धि दर्ज की गई। स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार व तीव्र विकास कार्य प्रमुख कारण रहे।
- **घटती वृद्धि का काल (1981-2011) -** परिवार नियोजन कार्यक्रम व छोटे परिवार अपनाने की प्रेरणा के कारण जनसंख्या में उच्च वृद्धि की प्रवृत्ति जारी रहते हुए भी वृद्धि दर में क्रमिक ह्रास दृष्टिगोचर हो रहा है।

4. **छोटा नागपुर का पठार के विस्तार एवं महत्त्व का वर्णन कीजिए।**
Describe the extent and importance of the Chota Nagpur Plateau.

उ. **छोटा नागपुर का पठार -**
- **विस्तार–** मुख्यत: झारखण्ड, दक्षिणी बिहार, उत्तरी छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल का पुरलिया जिला, ओडिशा का उत्तरी क्षेत्र।
- **महत्त्व–**
  - दामोदर नदी बेसिन कोयला भण्डार की दृष्टि से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र
  - पारसनाथ पहाड़ी छोटा नागपुर पठार की सबसे ऊँची चोटी है। यह जैनों का प्रमुख तीर्थ स्थल है।
  - राँची के पठार से निकलने वाली स्वर्ण रेखा नदी पर 'हुंडरू जल प्रपात' है।
  - छोटा नागरपुर पठारी क्षेत्र में ग्रेनाइट चट्टानों से निर्मित स्थलाकृति है।
  - हाथी व बाघ संरक्षण समेत अनेक जैव संरक्षण परियोजनाएँ।
  - वनोत्पाद की अधिकता – पठार का अधिकतम हिस्सा वनाच्छादित है।
  - प्राकृतिक पर्यटन हेतु उपयुक्त स्थल।

5. **राजस्थान में सीसा एवं जस्ता उत्पादन क्षेत्रों के वितरण को स्पष्ट कीजिए।**
Explain the distribution of lead and zinc production areas in Rajasthan.

उ. राजस्थान 603.53 मिलियन टन (88.61%) सीसा जस्ता अयस्क के सबसे बड़े संसाधनों से संपन्न है।
- **सीसा जस्ता उत्पादन क्षेत्र–** (i) रामपुर आगुचा (भीलवाड़ा) (ii) राजपुर दरीबा (राजसमंद) (iii) जावर–(उदयपुर) (iv) सावर और कायर–घुगरा (अजमेर) (v) बसंतगढ़ और डेरी (सिरोही)
- **उपयोग–** बैटरी बनाने में, ग्लास में कलरिंग एजेंट, सोल्डरिंग एजेंट।

2023

1. **Describe the time and duration of carboniferous period and its chief characteristics.**
कार्बोनिफेरस काल के समय और अन्तराल तथा इसकी प्रमुख विशिष्टताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर- कार्बोनिफेरस काल-

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

- कार्बोनिफेरस काल पृथ्वी के भू-वैज्ञानिक इतिहास में पेलियोजोइक युग का एक महत्त्वपूर्ण काल था, जो लगा 35.9 करोड़ से 29.9 करोड़ वर्ष पूर्व (लगभग 60 लाख वर्षों का अंतराल) तक चला।

विशिष्टताएँ :

- इस समय आर्मोरिकन हलचले हुई, जिनसे ब्रिटेन एवं फ्रांस सर्वाधिक प्रभावित हुए।
- इस युग में उभयचरों का विकास व विस्तार बढता गया।
- इस काल में रेंगने वाले जीवों का स्थल पर आविर्भाव हुआ।
- इसकाल में 100 फीट ऊँचे वृक्ष उत्पन्न हुए इसलिए इसे 'बड़े वृक्षों (ग्लोसोप्टिरस वनस्पतियों) का काल' कहते हैं।
- इस समय भ्रंशों में पेड़ो के दब जाने से गोंडवाना क्रम की चट्टानों का निर्माण हुआ, जिनमें कोयले के व्यापक निक्षेप मिलते है।

2. Which are the important Bauxite mining areas of Odisha, Gujarat and Jharkhand in India?
भारत में ओडिशा, गुजरात एवं झारखंड के प्रमुख बॉक्साइट खननक्षेत्र कौनसे हैं?

उत्तर-भारत में बॉक्साइट (एल्यूमीनियम उत्पादन के लिए कच्चा माल) के प्रमुख खनन क्षेत्र निम्नलिखित हैं :-

1. **ओडिशा:** भारत का सबसे बड़ा बॉक्साइट उत्पादक राज्य प्रमुख क्षेत्र हैं-कोरापुट (पंचपटमाली खान), कालाहांडी, संबन, और सुंदरगढ़।
2. **गुजरात :** कच्छ, जामनगर और भावनगर जिलों में बॉक्साइट खनन होता है। यहाँ का बॉक्साइट उच्च गुणवत्ता का है।
3. **झारखंड :** प्रमुख खनन क्षेत्र रांची (जोन्हा), लोहरदगा और गुमला जिलों में स्थित हैं।
इन क्षेत्रों से प्राप्त बॉक्साइट भारत के एल्यूमीनियम उद्योग के लिए महत्त्वपूर्ण है और निर्यात के लिए भी उपयोग होता है।

3. Discuss the period of high growth of population with declining trend (1981-2011) in India.
भारत में जनसंख्या की उच्च वृद्धि के साथ गिरावट की प्रवृत्ति (1981-2011) की विवेचना कीजिए।

उत्तर- भारत में जनसंख्या भारत में 1981 से 2011 तक जनसंख्या में उच्च वृद्धि दर के बावजूद गिरावट की प्रवृत्ति रखी गई।

- **घटती हुई वृद्धि दर का काल (सन 1981 के बाद)**
  - अंत के दो दशकों यानी सन् 1981 से सन् 2001 तक में जनसंख्या वृद्धि की दर में धीरे-धीरे आना प्रारम्भ हुआ। इसने भारत के जनसांख्यिकी इतिहास में एक नये दौर के प्रारंभ का संकेत दिया। इस काल में जन्मदर में तेजी से कमी आयी।
  - यह कमी 1971-81 के 37.2 प्रति हजार से 1991-2001 में 24.8 प्रति हजार तक अंकित की गयी।
  - प्राकृतिक वृद्धि में यह घटती हुई प्रवृत्ति एक धनात्मक दिशा की ओर संकेत करती है।2001-2011 के दशक में गिरकर अंतिम से 17.7% हो गई। वर्तमान में जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि दर 1.64% हैं।
  - सरकार द्वारा चलाये जा रहे परिवार कल्याण कार्यक्रम और लोगों की जागरूकता को इसका श्रेय जाता है।
- **2001-2011 के मध्य दशकीय वृद्धि**
  - इस अवधि के दौरान दशकीय वृद्धि दर 17.7% रही। 1951 के बाद पहली बार भारत की दशकीय वृद्धि दर 20% से कम रही है।
  - 2001 की जनगणना की तुलना में 2011 की जनगणना में दशकीय वृद्धि में सर्वाधिक कमी महाराष्ट्र में दर्ज की गई तथा न्यूनतम कमी आन्ध्रप्रदेश में दर्ज की गई
  - यह गिरावट जन्म दर में कमी, शहरीकरण, महिला सशक्तिकरण, स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार और परिवार नियोजन के कारण हुई हालांकि जनसंख्या का कुल आकार बढ़ा लेकिन वृद्धि दर में लगातार कमी आई, जो जनसंख्या स्थिरता की दिशा में एक सकारात संकेत है।

4. Give a brief account of Biomass projects of Rajasthan.
राजस्थान में बायोमास परियोजनाओं का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

उत्तर- राजस्थान में बायोमास परियोजनाएँ-राज्य में मार्च, 2024 तक 128.45 मेगावाट क्षमता के 14 बायोमास संयंत्र स्थापित किये जा चुके हैं जिसमें से 28 मेगावाट क्षमता के 2 संयंत्र वर्ष 2012 में बन्द हैं।

- राज्य में बॉयोमास आधारित सर्वाधिक संयंत्र **उदयपुर** जिले में स्थित हैं।

राजस्थान के प्रमुख बॉयोमास संयंत्र

(i) पदमपुरा बॉयोमास संयंत्र – श्री गंगानगर (राजस्थान का पहला)
(ii) खेड़ली बॉयोमास संयंत्र – अलवर
(iii) देवली बॉयोमास संयंत्र – टोंक
(iv) बालोतरा बॉयोमास संयंत्र – बालोतरा (शहरी कचरा आधारित)
(v) अजमेर बॉयोमास संयंत्र – अजमेर (विलायती बबूल आधारित)
(vi) रंगपुर बॉयोमास संयंत्र – कोटा (शहरी कचरा आधारित)
(vii) खातोली – उनियारा टोंक
(viii) रंगपुर – कोटा
(ix) चंदेरिया – चित्तौड़गढ़
(x) संगरिया – हनुमानगढ़
(xi) कचेला – बागसरी – सांचोर

5. Name the major endangered species of wild life found in Southern Aravalli region of Rajastha What are the major reasons for wild life loss in the state?
राजस्थान के दक्षिणी अरावली प्रदेश की प्रमुख संकटग्रस्त वन्यजीव प्रजातियों के नाम लिखिए। राज्य में वन्यजीव हानि मुख्य कारण क्या हैं?

उत्तर-राजस्थान के दक्षिणी अरावली प्रदेश की प्रमुख संकटग्रस्त वन्यजीव प्रजातियाँ हैं बाघ, सियागोश, भालू, चौसिंगा, उड़न गिलहरी, बिज्जू, देशी गिद्ध।

- **राजस्थान में वन्यजीव हानि के मुख्य कारण हैं:-**
  1. वनों की अतिक्रमण और अवैध कटाई।
  2. शिकार और मानव वन्यजीव संघर्ष।
  3. जीवों के आवास का नाश और मुलायम भूमि का कृषि कार्य।
  4. जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदाएँ।

5. प्राकृतिक संसाधनों का अति प्रयोग।

2024

1. विश्व के किन्हीं दस जैव-विविधता तप्त स्थलों के नाम लिखिए।

उत्तर-

विश्व के दस जैव-विविधता तप्त स्थल के नाम:

1. केलिफोर्निया फ्लोरिडा प्रोविंस
2. मेडरियन पाइन-ओक कुडलेण्ड्स
3. मेजोअमेरिका
4. करेबियन आइलेन्ड्स
5. अटलान्टिक फोरेस्ट
6. केराडो
7. चिलियन विंटर रेतफाल वाल्डिवियन फोरेस्ट
8. टेम्बेस चोको मागडेलेना
9. ट्रोपिकल एन्डिज
10. मेडिटेरियन बेसिन
11. केप फ्लोरिस्टिक रीजन
12. कॉस्टल फोरेस्ट ऑफ ईस्टर्न अफ्रीका
13. ईस्टर्न एफ्रोमोन्टे
14. गिनिअन फोरेस्ट ऑफ वेस्ट अफ्रीका
15. हॉर्न ऑफ अफ्रीका

2. भारत के पश्चिमी और पूर्वी तटीय मैदानों के बीच अन्तर बताइये।

उत्तर-

भारत के पश्चिमी और पूर्वी तटीय मैदानों के बीच अंतर-

आधार	पश्चिमी तटीय मैदान	पूर्वी तटीय मैदान
अवस्थिति	अरब सागर के किनारे, गुजरात-गोवा-महाराष्ट्र-कर्नाटक-केरल	बंगाल की खाड़ी के किनारे, तमिलनाडु-आंध्र-ओडिशा-प.बंगाल
चौड़ाई	संकरी (10-50 किमी)	अपेक्षाकृत चौड़ी (80-120 किमी)
प्रमुख घाटियाँ	घाटों, खाड़ियों, लैगून की उपस्थिति	डेल्टा, बड़ी नदियाँ, लैगून, झीलें
तटीय रेखा	सीधी, बिना बड़े डेल्टाओं के	अपरिष्कृत, डेल्टायुक्त, झीलों/खाड़ियों से युक्त
नदियाँ	छोटी, तेज बहती, कई स्थानों पर मुहाने	बड़ी—गोदावरी, कृष्णा, कावेरी, महानदी—प्रमुख डेल्टा बनाती
भूमि संरचना	पर्वतीय, पश्चिमी घाट से लगती; उँच-नीच	मैदान, पूर्वी घाटों के समानान्तर, डेल्टायुक्त
खेती/भूमि उपयोग	नारियल, कसावा, मसाले, मछली	धान, गन्ना, कपास, मछली
बंदरगाह/नगर	मुंबई, मारमगाँव, कोचिन, कालीकट, पोरबंदर	चेन्नई, विशाखापत्तनम, काकिनाडा, पारादीप, कोलकाता
जलवायु	भारी वर्षा, आर्द्र, मानसून	मानसूनी, ग्रीष्म/वर्षा दोनों, आंध्र/ओडिशा में चक्रवात संभावित

3. वर्तमान परिदृश्य में 'चिकन नेक' की अवस्थिति एवं सामरिक महत्ता का वर्णन कीजिए।

उत्तर-

अवस्थिति (Location)-

– 'चिकन नेक' या सिलीगुड़ी कॉरिडोर पश्चिम बंगाल राज्य में स्थित एक अत्यंत संकीर्ण भूमि पट्टी है, जो भारत के मुख्य भू-भाग को इसके उत्तर-पूर्वी राज्यों से जोड़ती है। इसकी लंबाई लगभग 60 किलोमीटर है, लेकिन चौड़ाई सबसे संकीर्ण बिंदु पर मात्र 20 से 22 किलोमीटर है।
- **निकटवर्ती सीमाएँ:** यह तीन देशों उत्तर में नेपाल, दक्षिण में बांग्लादेश तथा उत्तर-पूर्व में भूटान की सीमाओं के बीच स्थित है।

सामरिक महत्ता-

- **परिवहन:** भारत से पूर्वोत्तर तक जाने वाले सभी प्रमुख सड़क मार्ग (राष्ट्रीय राजमार्ग 27) और रेल मार्ग इसी संकीर्ण पट्टी से होकर गुजरते हैं।
- **आर्थिक आपूर्ति:** यह पूरे उत्तर-पूर्वी क्षेत्र को आवश्यक खाद्य सामग्री, ईंधन, दवाएँ और औद्योगिक वस्तुएँ पहुँचाने का एकमात्र माध्यम है।
- **सुरक्षा:** पूर्वोत्तर भारत और विशेष रूप से अरुणाचल प्रदेश (जिस पर चीन अपना दावा करता है) में तैनात भारतीय सेना और अर्धसैनिक बलों के लिए यह आपूर्ति का प्राथमिक स्रोत है।
- **त्वरित प्रतिक्रिया:** सैन्य उपकरणों, हथियारों और अतिरिक्त सैनिकों को चीन के साथ किसी भी संघर्ष की स्थिति में त्वरित रूप से भेजने के लिए इस कॉरिडोर का निर्बाध संचालन अत्यंत आवश्यक है।

यह कॉरिडोर उत्तर-पूर्वी राज्यों के लिए एकमात्र स्थलीय जीवन रेखा है।

4. राजस्थान के 'पवित्र उपवन' स्थलों का वर्णन कीजिए।

उत्तर-

– **पवित्र उपवन -** ऐसे वन या वृक्ष समूह हैं, जिन्हें स्थानीय जनजाति, ग्रामीण व परंपरागत समाज धार्मिक, सांस्कृतिक या आध्यात्मिक कारणों से संरक्षण देते हैं।
– ये क्षेत्र देवताओं, कुलदेवियों, लोकदेवताओं, या किसी विशिष्ट धार्मिक विश्वास से जुड़े होते हैं, जहाँ पेड़-पौधों की कटाई या क्षति वर्जित है।

मुख्य स्थल और क्षेत्रों के उदाहरण:

गोरधन (गौरव) उपवन:

– मेवाड़-मारवाड़ क्षेत्र में गाँव के पास स्थित ग्राम देवता/कुल देवी का थान, विशिष्ट वृक्ष (बोर, नीम, पीपल) के चारों तरफ भक्तजन पूजा करते हैं।

ओरण (Oran):

– शेखावाटी, बूँदी, जैसलमेर आदि क्षेत्रों में 'ओरण' के नाम से ज्ञात—ग्राम देवी-देवता का भूमि-पट्टा, उसमें पेड़-पौधों, वन्य जीवों का संरक्षण।

देव-वन/थान:

– भीलवाड़ा, कोटा, एकलिंगजी (उदयपुर), चौथ का बरवाड़ा—ऐसे स्थलों में वृक्ष संरक्षण पवित्रता से जुड़ा।

मालणी वन क्षेत्र:

– पश्चिमी राजस्थान में जहाँ विशिष्ट वृक्षों (खेजड़ी, बबूल, कुमठा) की सामूहिक क्षेत्ररक्षण एवं उपासना।

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

बिश्नोई उपवन (वृद्ध खेजड़ी/कूमठा):

– बिश्नोई समाज में 'जम्भेश्वर जी' के नाम से पवित्र वन, वन्य जीवों/नील गाय, हिरन इत्यादि का पूर्ण संरक्षण।

5. राजस्थान की "एकीकृत स्वच्छ ऊर्जा नीति 2024" की विवेचना कीजिए।

उत्तर-

राजस्थान सरकार ने 16 जुलाई 2025 को इस नीति को अधिसूचित किया-

– नीति की समय सीमा मार्च 2029 तक है, यानी यह औपचारिक रूप से उस तारीख तक प्रभावी होगी, जब तक कि इसे बदल न दिया जाए।

– इसका मूल लक्ष्य है राजस्थान को "हरित ऊर्जा का एक प्रमुख केंद्र" बनाना और राज्य में निवेश को आकर्षित करना।

– **लक्ष्य एवं प्राथमिकताएँ (Targets & Focus Areas)**

ऊर्जा क्षमता लक्ष्य :

– 2030 तक कुल 125 GW (गीगावॉट) अक्षय ऊर्जा क्षमता का लक्ष्य है।

इस 125 GW के विभाजन में:

– सौर (Solar): 90, 000 MW (i.e., 90 GW)

– पवन + हाइब्रिड (Wind & Hybrid): 25, 000 MW

– जल (Hydro), पम्प स्टोरेज और बैटरी ऊर्जा भंडारण: 10, 000 MW

लक्ष्य:

– 2030 तक 125 गीगावाट (GW) अक्षय ऊर्जा स्थापित क्षमता प्राप्त

ऑफ-ग्रिड व डीसेंट्रलाइज्ड सोलर:

– ग्रामीण/अनुप्रवेश क्षेत्रों, किसानों/पंप्स हेतु सौर पम्प, होम लाइटिंग, सामुदायिक प्रोजेक्ट।

राजकीय विभागों हेतु नोडल एजेंसी:

– "राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम लिमिटेड" (RRECL)।

महत्व व संभावित लाभ:

– राष्ट्रीय अक्षय ऊर्जा लक्ष्य (500 GW) में राजस्थान की अग्रणी भागीदारी।

– निवेश, रोजगार, ग्राम्य विद्युतीकरण, पर्यावरणीय संरक्षण को बढ़ावा।

  – राज्य की ऊर्जा आत्मनिर्भरता, नवाचार और हरित अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन।

❑❑❑

Part - C
10 MARKS

2021

1. दक्षिण पूर्व एशिया की भू – राजनीतिक समस्याओं की विवेचना कीजिए –
Discuss the geo-political problems of South East Asia.

उ. दक्षिण पूर्वी एशिया में विश्व की लगभग 65 करोड़ आबादी निवास करती है। यहाँ की सकल घरेलू उत्पाद 3 खरब अमेरिकी डॉलर के आस – पास है। दक्षिण पूर्वी एशिया में मुख्य रूप से थाइलैण्ड, म्यांमार, मलेशिया, कम्बोडिया, लाओस, सिंगापुर, वियतनाम, तिमोर लिश्ते, इण्डोनेशिया, फिलीपींस शामिल हैं । ये सभी देश आसियान समूह से जुड़े हैं, जो कि आर्थिक एवं सांस्कृतिक एकीकरण को बढ़ावा देते हैं। लेकिन वर्तमान में दक्षिण पूर्वी एशिया निम्नलिखित समस्याओं से जूझ रहा है -

- दक्षिणी चीन सागर में चीन की बढ़ती आक्रामकता यथा – स्प्रेटली एवं पार्सल द्वीप पर 9 डैश लाइन के तहत् अधिकार जताना।
- चीन द्वारा कठोर आर्थिक नीतियों का अनुसरण कर 'डैब्ट ट्रैप', 'बेल्ट एवं रोड इनिशिएटिव' एवं 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' (मोतियों की माला) की नीति के आर्थिक प्रभुत्व को स्थापित करने का प्रयास करना।
- बिम्सटेक जैसे संगठन में द.पू. एशिया के देशों का पर्याप्त प्रतिनिधित्व न होना।
- RCEP समझौते से भारत का बाहर होना ।
- आसियान देशों जैसे मलेशिया, थाईलैण्ड, वियतनाम एवं सिंगापुर द्वारा दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों की आपूर्ति श्रृंखला का लाभ उठाना अन्य देशों को पर्याप्त लाभ न होना।
- 'गोल्डन ट्रायंगल' दक्षिण – पूर्वी एशिया में नशाखोरी एवं ड्रग्स व्यापार (तस्करी) का केन्द्र ।
- म्यांमार के रखाइन प्रान्त से विस्थापित रोहिंग्या समुदाय के लोगों द्वारा भारत, बांग्लादेश एवं अन्य पड़ोसी देशों में घुसपैठ एवं अवैध प्रवास की समस्या उत्पन्न करना ।
- चीन द्वारा 'one China Policy' के तहत् ताइवान पर अपना अधिकार घोषित करने का प्रयास करना।

2. राजस्थान में गैर-परम्परागत ऊर्जा के विकास का विवरण दीजिए ।
Give an account of the development of non-conventional energy in Rajasthan.

उ. वर्तमान में विश्व व्यापार ऊर्जा संकट का हल ऊर्जा के गैर – परम्परागत स्त्रोत हैं अर्थात् सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, बायो गैस आदि। भारत में गैर – परम्परागत ऊर्जा के विकास पर विशेष बल दिया जा रहा है। राजस्थान द्वारा इस कार्य हेतु 'राजस्थान सौर ऊर्जा विकास एजेन्सी' (REDA) का गठन 21 जनवरी, 1958 को किया गया, जिसका उद्देश्य ऊर्जा के गैर - परम्परागत स्त्रोतों को राज्य में समन्वित कर विकास करना है।

मार्च, 1999 में राज्य में गैर – परम्परागत ऊर्जा स्त्रोंतों की नीति घोषित की गई। राजस्थान अक्षय ऊर्जा निगम द्वारा चलाई जा रही महत्त्वपूर्ण योजना / कार्यक्रम हैं- सोलर एनर्जी द्वारा ग्रामीण विद्युतीकरण योजना, सोलर सिटी कार्यक्रम तथा ऊर्जा संरक्षण कार्यक्रम ।

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

- **सौर ऊर्जा –** राजस्थान राज्य ने सौर ऊर्जा के विकास को बढ़ावा देने के लिए सौर ऊर्जा नीति वर्ष 2011 में घोषित की । वर्तमान में राज्य सरकार द्वारा निवेशकों को आकर्षित करने के लिए राजस्थान सौर ऊर्जा नीति वर्ष 2019 में जारी की गई । इन्हीं प्रयासों के माध्यम से वर्तमान में 9228.70 मेगावाट के सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित हो चुकें हैं ।
- **पवन ऊर्जा –** पवन ऊर्जा के माध्यम से बिजली उत्पादन में राजस्थान अग्रणी राज्य रहा है। राजस्थान का प्रथम पवन ऊर्जा संयंत्र वर्ष 1999 में अमर सागर जैसलमेर में स्थापित किया गया । पवन ऊर्जा के क्षेत्र में निवेश को लाभान्वित करने के उद्देश्य से जुलाई, 2012 में अपनी पवन ऊर्जा नीति घोषित की ।
  वर्तमान में राज्य सरकार द्वारा राजस्थान विण्ड एण्ड हाइब्रिड एनर्जी पॉलिसी , दिसम्बर, 2019 में जारी की गई । राज्य सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयास के माध्यम से दिसम्बर, 2021 तक राज्य में कुल 4,338 मेगावाट क्षमता के पवन ऊर्जा संयंत्र स्थापित किए जा चुके हैं ।
- **बायोमास ऊर्जा -** अक्षय ऊर्जा के विभिन्न स्त्रोतों में बायोमास ऊर्जा, स्वच्छ ऊर्जा का एक महत्त्वपूर्ण स्त्रोत है। राज्य सरकार द्वारा बायोमास ऊर्जा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बायोमास नीति, 2010 जारी की गई । इस नीति के माध्यम से दिसम्बर, 2021 तक राज्य में 120.45 मेगावाट क्षमता के 13 बायोमास ऊर्जा संयंत्र स्थापित किए जा चुके हैं ।

3. भू – धरोहर स्थल की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए तथा राजस्थान में इसकी संभाव्यता पर प्रकाश डालिए –

Explain the concept of geo-heritage site and throw light on its potential in Rajasthan.

उ. जियोहेरिटेज (भू-धरोहर) स्थल वह महत्त्वपूर्ण स्थल है, जो प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक रूप से महत्त्वपूर्ण हो । इन स्थलों के माध्यम से पृथ्वी के विकास एवं उसके आन्तरिक भागों के अनुसंधान, शिक्षण या संदर्भ के लिए उपयोग किया जा सकता है। भू – विरासत साइटों में महत्त्वपूर्ण तत्व शामिल है - शैक्षिणक, वैज्ञानिक, सौंदर्य और साइटों का मूल्य। ये सभी तत्व अस्थाई है, जिन्हें एक बार नष्ट हो जाने के बाद पुन: नहीं बनाया जा सकता।

- भारतीय भू-वैज्ञानिक सर्वेक्षण (जीएसआई) सर्वोच्च निकाय है, जो भारत में ऐसे दुर्लभ और अद्वितीय भू-वैज्ञानिक स्थलों की पहचान और संरक्षण देने के लिए प्रयास करता है। वर्ष 2001 में जीएसआई ने भारत में 26 भू – वैज्ञानिक स्थलों को राष्ट्रीय भू-वैज्ञानिक स्मारक या भू – विरासत स्थल के रूप में वर्णित किया ।
- राजस्थान में भी ऐसे भू – धरोहर स्थल है, जो भूवैज्ञानिक और भू-आकृति विज्ञान की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। वर्ष 2001 में जीएसआई ने राजस्थान में 10 भू-विरासत स्थलों की पहचान की हैं -
  1. नेफलाइन साइनाइट, किशनगढ़
  2. सेंद्रा ग्रेनाइट, पाली
  3. बर्र समूह, पाली
  4. जोधपुर ग्रुपमालानी इग्नियस सुइट कॉन्टैक्ट - जोधपुर
  5. वेल्डेड टफ, जोधपुर
  6. आकल वुड फॉसिल पार्क, जैसलमेर
  7. ग्रेट बाउण्ड्री फॉल्ट, बूँदी
  8. स्ट्रोमेटोलाइट फॉसिल पार्क, चित्तौड़गढ़
  9. दरीबा मिनरलाइज़्ड बेल्ट गोसन, उदयपुर
  10. स्ट्रोमेटोलाइट फॉसिल पार्क झामरकोटडा, उदयपुर
- वर्ष 2016 में जीएसआई ने दो प्रमुख स्थल जावर (उदयपुर) और रामगढ़ क्रेटर (बारां) को भू- धरोहर के रूप में विकसित किया है। जिसके माध्यम से इन भू-धरोहर को संरक्षण मिलेगा तथा भू-पर्यटन की संभावनाओं का विकास होगा।

2018

1. पृथ्वी सतह पर पैलियोज़ोइक कल्प के प्रमुख महत्त्वपूर्ण विकास का विवेचन कीजिए।

Elucidate the landmark developments during Palaeozoic era on the earth's surface.

उ. पुराजीवी अथवा पैलियोज़ोइक महाकल्प पृथ्वी सतह का प्राथमिक युग भी कहलाता है। यह 600 मिलियन वर्ष पूर्व प्रारम्भ होकर 225 मिलियन वर्ष पूर्व समाप्त हुआ। इसके निम्नलिखित उपभाग हैं-

- **कैम्ब्रियन-** प्रथम बार स्थल भागों पर समुद्रों का अतिक्रमण हुआ, प्राचीनतम अवसादी शैलों का निर्माण, विंध्याचल का निर्माण, पृथ्वी पर बिना रीढ़ की हड्डी वाले जीवों तथा वनस्पति की उत्पत्ति, समुद्र में घासों की उत्पत्ति।
- **आर्डोविसियन-** सागरीय वनस्पतियों का विस्तार, समुद्र में रेंगने वाले जीव भी उत्पन्न हुए। स्थल अभी भी जीवविहीन।
- **सिल्यूरियन-** 'रीढ़ वाले जीवों का काल', समुद्र में मछलियों की उत्पत्ति, प्रवाल जीवों का विस्तार स्थल पर पहली बार पौधों (पत्तीविहीन) का उद्भव, यह व्यापक कैलिडोनियन पर्वतीय हलचलों का काल भी है।
- **डिवोनियन-** मत्स्य युग कहा जाता है। शार्क मछली का प्रादुर्भाव। उभयचर जीवों की उत्पत्ति, फर्न वनस्पतियों की उत्पत्ति। ज्वालामुखी क्रियाएँ सक्रिय हुई।
- **कार्बोनीफेरस-** उभयचरों का विकास व विस्तार, रेंगने वाले जीव का स्थल पर आविर्भाव, 'बड़े वृक्षों का काल' 100 फुट ऊँचे वृक्ष उत्पन्न हुए। गोंडवाना क्रम की चट्टानों का निर्माण।
- **पर्मियन-** हर्सीनियन पर्वतीकरण का काल। भ्रंशोत्थ पर्वतों का निर्माण। स्थल पर जीवों व वनस्पतियों की अनेक प्रजातियों का विकास। भ्रंशन के कारण उत्पन्न झीलों के वाष्पीकरण से पृथ्वी पर पोटाश भण्डारों का निर्माण हुआ।

2. भारत में वर्षा के वितरण पर पर्वतीय प्रभाव का विवेचन कीजिए।

Discuss orographic impact on rainfall distribution in India.

उ. भारत में अधिकांश वर्षा जून से सितम्बर के माह में दक्षिण पश्चिम मानसून की अरब सागर शाखा व बंगाल की खाड़ी शाखा से प्राप्त होती है। अरब सागर शाखा द्वारा पश्चिमी तट पश्चिमी घाट, महाराष्ट्र, गुजरात, मध्यप्रदेश के कुछ हिस्सों में तथा बंगाल की खाड़ी शाखा द्वारा पूर्वोत्तर, पश्चिम बंगाल, तटीय मैदान, राजस्थान में वर्षा होती है। भारतीय वर्षा पर पर्वतीय प्रभाव को निम्नलिखित बिन्दुओं से समझा जा सकता हैं-

- अरब सागर शाखा हिमालय से टकराकर जम्मू-कश्मीर एवं हिमाचल प्रदेश के पर्वतीय ढालों पर वर्षा करती है।
- अरब सागर की मानसूनी पवनों के अरावली पर्वत के समानान्तर प्रवाह से राजस्थान में वर्षा नहीं हो पाती।
- महाराष्ट्र का विदर्भ क्षेत्र, तेलंगाना का पठार एवं उत्तरी कर्नाटक का पठारी क्षेत्र पर्वत के पवन विमुख ढाल (वृष्टि छाया प्रदेश) पर उपस्थित होने के कारण वर्षा से वंचित रह जाते हैं।
- बंगाल की खाड़ी से आने वाली हवाएँ गारो, खासी, जयन्तिया पहाड़ियों से टकराकर अत्यधिक वर्षा करती है। खासी पहाड़ी के दक्षिण में स्थित 'मासिनराम' संसार में सर्वाधिक वर्षा वाला स्थान है।
- मेघालय पठार के पवन विमुखी ढाल पर उपस्थित शिलांग व गुवाहाटी में तुलनात्मक रूप से काफी कम वर्षा होती है।
- सारांशत: भारत में वर्षा वितरण पर पर्वतीय अवस्थिति का विशेष प्रभाव दृष्टिगोचर होता है, जो कुछ स्थानों पर पर्याप्त वर्षा तथा कुछ स्थानों पर कम वर्षा के रूप में परिलक्षित होता है।

3. राजस्थान की नदी प्रणालियों का वर्णन कीजिए।
Describe river system of Rajasthan.

उ. राजस्थान में तीन प्रकार की नदी प्रणालियाँ पाई जाती है-

- **अरब सागर में विलीन होने वाली नदियाँ-** 17%भू-भाग पर।
  - **लूनी नदी-** अजमेर के आनासागर से निकलकर नागौर, पाली, जोधपुर, बाड़मेर, जालौर जिलों में बहते हुए कच्छ की खाड़ी में गिरती हैं, बरसाती नदी हैं। बाण्डी, सुकड़ी, जवाई, मीठड़ी, जोजड़ी प्रमुख सहायक नदियाँ हैं।
  - **माही नदी-** मध्यप्रदेश से निकलकर दक्षिणी राजस्थान में बाँसवाड़ा में प्रवेश करती है। कर्क रेखा को दो बार काटने वाली यह नदी खम्भात की खाड़ी में गिरती है। सोम, अनास, चाप, जाखम इसकी मुख्य सहायक नदियाँ हैं।
  - **सोम-** उदयपुर जिले में बीछामेड़ा से निकलकर बेणेश्वर स्थान पर माही में मिलती है। जाखम गोमती व सारनी सहायक नदियाँ हैं।
- **बंगाल की खाड़ी में विलीन होने वाली नदियाँ-** 23% भू-भाग पर।
  - **चम्बल-** मध्यप्रदेश के महू जिले से निकलकर चौरासी गढ़ के समीप राजस्थान में प्रवेश करती है। कोटा, बूँदी, सवाईमाधोपुर, धौलपुर में बहते हुए यमुना में मिल जाती है। बनास, काली सिन्ध, पार्वती आदि मुख्य सहायक नदियाँ हैं।
  - **बनास-** खमनौर पहाड़ियों से निकलकर नाथद्वारा, कांकरोली, राजसमन्द, भीलवाड़ा, टोंक व सवाई माधोपुर में बहती हुई रामेश्वरम (सवाईमाधोपुर) में चम्बल से मिल जाती है। इसे वन की आशा कहते हैं। बेड़च, कोठारी, खारी, मैनाल, धुन्ध, मोरेल, मानसी प्रमुख सहायक नदियाँ हैं।

    इनके अतिरिक्त गम्भीरी, कोठारी, पार्वती, बाणगंगा, कालीसिंध, परवन आदि नदियाँ भी बंगाल की खाड़ी अपवाह तंत्र का हिस्सा हैं।
- **आंतरिक अपवाह-** 60% भू-भाग पर।
  - **घग्घर-** हिमालय की शिवालिक पहाड़ियों से निकलकर पंजाब हरियाणा में बहते हुए श्रीगंगानगर के समीप राजस्थान में प्रवेश करती है। भटनेर (हनुमानगढ़) में प्राय: विलुप्त हो जाती है। प्राचीन सरस्वती के प्रवाह क्षेत्र में बहती है।
  - इसके अलावा कान्तली (सीकर), मेंढ़ा नदी (सीकर), साबी (जयपुर), मन्था (जयपुर), रूपनगढ़ (अजमेर), काकनेय या काकनी (जैसलमेर) आंतरिक अपवाह की प्रमुख नदियाँ हैं।

2016

1. भारत के तटीय मैदानों को उप-विभागों में विभाजित कीजिए तथा उनकी विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
Divide the coastal plains of India into sub-divisions and describe their characteristics.

उ. **तटीय मैदान–** प्रायद्वीपीय पठारी भाग के पूर्व व पश्चिम में दो संकरे तटीय मैदान मिलते हैं, जिन्हें क्रमश: पूर्वी तटीय मैदान तथा पश्चिमी तटीय मैदान कहा जाता है। इनका निर्माण सागरीय तरंगों द्वारा अपरदन व निक्षेपण से होता है।

- **भारत तटीय मैदानों की विशेषता–**

(i)	चौड़ाई–	पूर्वी तट	100–100 किमी.
		पश्चिमी तट	50 किमी.
(ii)	विस्तार–	पूर्वी तट	ओडिशा–तमिलनाडु
			उत्कल तट
			कोरोमण्डल तट
		पश्चिमी तट	गुजरात–केरल

  a) कोकण तट
  b) कन्नड़ तट
  c) मालाबार तट

(iii) डेल्टा – प्राय पूर्वी तट पर पाए जाते हैं। उदा. कृष्णा गोदावरी डेल्टा।
(iv) लैगुन झील–मुख्यत: पश्चिमी तट पर पाए जाते है। उदा. कौलेरू झील, पुलकट झील।
(v) ढाल– पश्चिमी तट का ढाल पूर्वी तट से ज्यादा।
(vi) संसाधन– पूर्वी तट में वनस्पति विविधता, जल संसाधन, थोरियम इत्यादि। पश्चिमी तट में लोहा, अभ्रक, मैंगनीज, मुख्य बन्दरगाह।
(vii) नदमुख– पश्चिमी तट पर पाए जाते है।
(viii) आवास– पूर्वी तट पर कम बसावट है, क्योंकि यहाँ ज्यादा चक्रवात आते है।
(ix) महाद्वीपीय शेल्फ – पश्चिमी तट का महाद्वीपीय शेल्फ ज्यादा मोटा है।

2. राजस्थान में भील जनजाति के आवास, अर्थव्यवस्था एवं समाज का वर्णन कीजिए।
Describe the habitat, economy and society of Bhil tribe in Rajasthan.

उ. **परिचय–** भील जनजाति राजस्थान की सबसे प्राचीन जनजाति है तथा मीणा जनजाति के बाद राज्य की दूसरी सर्वाधिक बड़ी जनजाति है। राजस्थान के बाँसवाड़ा, डूँगरपुर, उदयपुर, प्रतापगढ़, सिरोही में इनका बाहुल्य है।

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

- **आवास–** भीलों के घरों को 'टापरा' या 'कू' कहते है। टापरा के बाहर बने बरामदे को 'ढालिया' कहते है।
- **अर्थव्यवस्था–** भीलों के आजीविका साधन– कृषि, शिकार एवं वन उत्पाद है।
- **समाज–** भीलों का परिवार पितृसत्तात्मक होता है तथा भीलों में कुटुम्ब प्रथा विद्यमान है। भीलों के गाँवों के मुखिया को पालवी/तदवी कहते हैं। भीलों के गाँवों का मुखिया 'गमेती' कहलाता है।
- **भाषा–** भील वागड़ी बोलते हैं, जो मेवाड़ी व गुजरात से प्रभावित है।
- **विवाह–** हाथीवैण्डो विवाह– पीपल को साक्षी मानकर दुल्हा–दुल्हन जीवन साथी बनते हैं।
- **अपहरण विवाह–** लड़का–लड़की भागकर शादी कर लेते हैं। तलाक को 'छेड़ा फाड़ना' कहते हैं।
- **देवी–देवता–** भराड़ी माता– विवाह की देवी, टोटम– भीलों के कुल देवता।
- **मेले–** बेणेश्वर–(डूंगरपुर) आदिवासियों का कुंभ
- **नृत्य–** गैर, हिचकी, घूमरा, गवरी,
- **पुरुष वस्त्र–** फेंटा, ढेपाड़ा
- **स्त्रियों के वस्त्र–** कछाबू, सिंदूरी, पिरिया
- **आभूषण–** हसली, नथ, बालिया।

भील केसरिया जी की केसर पीकर झूठ नहीं बोलते हैं।

2016 Special mains

1. विश्व में भूकम्पों के वितरण का वर्णन कीजिए।

Describe the distribution of earthquakes in the world.

उ. विश्व में भूकम्पों का वितरण विभिन्न पेटियों में किया गया है।

परिप्रशांत महासागर पेटी– विश्व के 63% भूंकप इसी क्षेत्र में आते हैं। यह पेटी दो शाखाओं में विभाजित है-

(a) कमचटका प्रायद्वीप– पूर्वी द्वीप समूहों तक

(b) चिली–अलास्का तक। इस क्षेत्र में भूकंप प्लेटों के अभिसरण, भ्रंशन एवं ज्वालामुखी सक्रियता से हैं। यहाँ गहरे, मध्यम, छिछले तीनों प्रकार के भूकंपीय उद्गम क्षेत्र पाए जाते हैं।

- ➢ **मध्य महाद्वीपीय पेटी–** यहाँ विश्व के लगभग 21% भूकंप प्लेटों के अभिसरण के कारण आते है। जो भ्रंशमूलक या संतुलनमूलक होते है।
- यह पेटी पुर्तगाल, स्पेन, इटली, यूनान, तुर्की, ईरान तथा उत्तरी भारत, चीन, म्यांमार तक फैली हुई है।
- भूकंप से प्रभावित क्षेत्रों में भारत का हिमालय एवं म्यांमार की पहाड़ियाँ तथा आल्पस इसी क्षेत्र में आता है। इसको 'अल्पाईन पेटी' भी कहते हैं।
- ➢ **मध्य अटलांटिक पेटी–** सामान्यत: इस पेटी में कम तीव्रता के भूकंप आते हैं, जो प्लेटों के अपसरण से रूपांतरण भ्रंश के निर्माण एवं दरारी ज्वालामुखी उद्गार के कारण आते हैं। यह उत्तर में आइसलैंड से लेकर दक्षिण में 'बोवेट द्वीप' तक फैली हुई है, इस पेटी के भूकंप विषुवत रेखा के पास के क्षेत्रों में आते हैं।

अन्य क्षेत्र– (i) पूर्वी अफ्रीकन पेटी (ii) हिन्द महासागरीय पेटी

2. भारत के 'दक्कन ट्रैप' के प्रमुख क्षेत्रों का विस्तार से विवेचन कीजिए।

Discuss in detail the major areas of 'Deccan Trap' of India.

दक्कन ट्रैप–

उ. क्रिटेशियस बेसाल्टिक लावा प्रवाह का एक मोटा अनुक्रम है, जो लगभग 0.5 लाख वर्ग किमी. में फैला हुआ है। कटाव के कारण यह बेसाल्टिक लावा कि मिट्टी चरणबद्ध तरीके से नष्ट हो गई है, उसे दक्कन ट्रैप कहा जाता है।

- इन्हीं चट्टानों के अपक्षय तथा अपरदन से काफी मिट्टी का निर्माण हुआ है। महाराष्ट्र तथा गुजरात में अत्यधिक विस्तार है।
- ज्वालामुखी से निकले बेसाल्ट की कई क्रमिक परतों को ट्रैप कहा जाता है। इसका महाराष्ट्र में सर्वप्रथम क्रिटेशियस काल में दरारी उद्गम से बेसाल्ट का जमाव हुआ। इस बेसाल्ट परत के ऊपर अपक्षय के कारण मिट्टी का स्तर बढ़ा, जिस पर वनस्पति एवं जीवों का विकास हुआ। इयोसीन काल में पुन: ज्वालामुखी से निकले बेसाल्ट लावा की दूसरी परत फैल गई। पहली एवं दूसरी परतों के बीच को अन्त: ट्रैपीय संस्तर कहा जाता है। पुन: तीसरी बार ज्वालामुखी बेसाल्ट की तीसरी एवं नवीनतम ट्रैप का निर्माण हुआ।

3. राजस्थान की 'गरासिया' जनजाति की सामाजिक–आर्थिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

Describe the socio-economic characteristics of 'Garasia' tribe of Rajasthan.

उ. गरासिया जनजाति राजस्थान की तीसरी सबसे बड़ी जनजाति है। यह जनजाति स्वयं को चौहानों का वंशज मानती है तथा शिव, दुर्गा और भैरव की पूजा करते है। यह मुख्य रूप से सिरोही, गोगुन्दा (उदयपुर), बाली (पाली), डूँगरपुर, बाँसवाड़ा जिलों में निवास करती हैं।

➢ **सामाजिक जीवन की विशेषताएँ-**

- समाज मुख्यत: एकांकी परिवारों में विभक्त रहता है।
- परिवार पितृसत्तात्मक होते हैं। पिता परिवार का मुखिया होता है।
- समाज में जाति पंचायत का विशेष महत्त्व होता है।
- पंचायत द्वारा आर्थिक व शारीरिक दण्ड दिया जाता है।
- दो वर्गों में विभाजित- मोटी जात (मोटी न्यात) व नानकी जात (छोटी न्यात) ।
- यह जनजाति दो भागों में विभाजित है– (i) भील गरासिया– जब कोई गरासिया पुरुष भील स्त्री से विवाह करता है तो वह भील गरासिया कहलाता है। (ii) गमेती गरासिया– जब कोई भील पुरुष, गरासिया स्त्री से विवाह करता है तो वह गमेती गरासिया कहलाता है।
- गरासिया जनजाति में कई अंधविश्वास व्याप्त है।

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

- इनके गाँव का विस्तार बिखरा-बिखरा होता है, एक गाँव में प्राय: एक ही गोत्र के लोग रहते हैं।
- घर जवांई (सेवा विवाह) की प्रथा भी प्रचलित।

➢ **आर्थिक जीवन की विशेषताएँ-**

- गरासिया जनजाति के लिए वन ही जीवन का मुख्य आधार है।
- कृषि कार्य में मक्का, गेंहू की खेती करते है।
- लकड़ी काटना, पशु चराना, शिकार करना प्रमुख कार्य है।
- मजदूरी करने हेतु शहर, कस्बों में भी पलायन हुआ है।
- विभिन्न मेलों का आयोजन जो आर्थिक कमाई का महत्त्वपूर्ण साधन है। उदाहरण - गौर का मेला, गोगुन्दा का मेला।

2023

1. **Discuss the causes and effects of Ozone layer depletion in the world.**
विश्व में ओजोन परत के क्षरण के कारणों एवं प्रभावों की विवेचना कीजिए।

उत्तर- ओजोन परत पृथ्वी की वायुमंडल में स्थित एक पतली परत है, जो यूवी (पराबैंगनी) किरणों से पृथ्वी और जीवन को बचाने का कार्य करती है। यह परत ऑक्सीजन (O_2) और ओजोन (O_3) के अणुओं से बनी होती है, जो सूरज की हानिकारक यूवी किरणों को अवशोषित कर पृथ्वी पर जीवन के लिए उपयुक्त वातावरण बनाए रखती है। हालांकि, इंसानी गतिविधियों ने ओजोन परत के क्षरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जिसके कारण पर्यावरण और मानव जीवन पर गंभीर प्रभाव पड़ रहे हैं।

- **ओजोन परत के क्षरण के कारण**:
  1. **क्लोरोफ्लोरोकार्बन्स (CFCs):** ओजोन परत के क्षरण का सबसे बड़ा कारण CFCs (Chlorofluorocarbons) हैं। ये रसायन, जो मुख्य रूप से एरोसोल स्प्रे, फ्रिजीरेटर्स, और एयर कंडीशनर्स में पाए जाते थे, वायुमंडल में जाकर ओजोन अणुओं के साथ प्रतिक्रिया करते हैं और उन्हें नष्ट कर देते हैं। CFCs जब वायुमंडल में उच्च स्तर तक पहुंचते हैं, तो यह ओजोन अणुओं को तोड़ने वाली रासायनिक प्रतिक्रियाओं को उत्पन्न करते हैं।
  2. **हाइड्रोक्लोरोफ्लोरोकार्बन्स (HCFCs):** HCFCs भी ओजोन परत को नुकसान पहुंचाने वाले रसायन हैं, जो CFCs के कुछ हद तक सुरक्षित विकल्प के रूप में उपयोग होते हैं, लेकिन फिर भी इनका वायुमंडल में प्रभाव पड़ता है। ये रसायन धीरे-धीरे वायुमंडल में टूटकर ओजोन परत को क्षति पहुँचाते हैं।
  3. **ब्रोमिनेटेड हाइड्रोकार्बन्स** Bromine (ब्रोमीन) वाले रसायन भी ओजोन परत के क्षरण में योगदान करते हैं। ये रसायन CFCs के समान प्रभाव डालते हैं और वायुमंडल में बढ़ने से ओजोन को नष्ट करने वाली प्रतिक्रियाओं को उत्पन्न करते हैं।
  4. **उद्योगों से निकलने वाली गैसें:** कुछ उद्योगों से निकलने वाली गैसें, जैसे नाइट्रोजन ऑक्साइड्स (NO_x) और विविध रसायन, ओजोन परत को कमजोर करने में योगदान करते हैं। ये गैसें ओजोन को तोड़ने वाले रासायनिक रूप उत्पन्न कर सकती हैं।
  5. **प्राकृतिक कारण:** प्राकृतिक घटनाएँ, जैसे सूर्य की गतिविधियाँ और प्राकृतिक वनस्पति की उत्पत्ति (जिससे कुछ रासायनिक गैसें निकलती हैं), भी ओजोन परत के क्षरण में भूमिका निभाती हैं।
- **ओजोन परत के क्षरण के प्रभाव:**

1. **स्वास्थ्य पर प्रभाव:**
   - **कैंसर:** ओजोन परत का क्षरण यूवी-बी (UV-B) किरणों के बढ़ते स्तर का कारण बनता है। UV-B किरणें त्वचा कैंसर, जैसे मेलानोमा और नॉन-मेलनोमेस्किन कैंसर का खतरा बढ़ा सकती हैं।
   - **आंखों की समस्याएँ:** UV-B किरणें आंखों की काटारेक्ट (मोतियाबिंद) जैसी गंभीर बीमारियाँ उत्पन्न कर सकती हैं, जिससे दृष्टिहीनता हो सकती है।
   - **इम्यून सिस्टम पर प्रभाव:** UV-B किरणें शरीर के रक्षा तंत्र को कमजोर कर सकती हैं, जिससे शरीर संक्रामक रोगों से लड़ने में सक्षम नहीं रहता।
2. **पर्यावरण पर प्रभाव:**
   - **पौधों की वृद्धि में बाधा:** ओजोन परत के क्षरण से बढ़ी हुई UV-B किरणें पौधों की वृद्धि को प्रभावित कर सकती हैं। यह कृषि उत्पादकता को घटा सकती है और वनस्पतियों के लिए हानिकारक हो सकती हैं, जिससे खाद्य सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है।
   - **जलीय जीवन पर प्रभाव:** महासागरों और जलाशयों में पाई जाने वाली जलजीवों, जैसे पानी में रहने वाले छोटे जीव, पर भी UV-B किरणों का प्रभाव पड़ सकता है, जिससे उनके विकास और प्रजनन क्षमता में कमी आ सकती है। यह खाद्य श्रृंखला को प्रभावित कर सकता है।
   - **मिट्टी में बदलाव:** UV-B किरणें मिट्टी के संरचनात्मक तत्वों पर प्रभाव डाल सकती हैं, जो उसके पोषक तत्वों को प्रभावित कर सकते हैं और इससे खेती की क्षमता में गिरावट आ सकती है।
3. **जलवायु परिवर्तन पर प्रभाव:** ओजोन परत का क्षरण ग्लोबल वार्मिंग से जुड़ा हो सकता है, क्योंकि ओजोन और कार्बन डाइऑक्साइड जैसी गैसें एक दूसरे से संबंधित हैं। ओजोन परत के क्षरण से, वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों का प्रभाव बढ़ सकता है, जो जलवायु परिवर्तन को और अधिक गंभीर बना सकता है।
4. **वायुमंडल पर प्रभाव:** ओजोन परत के क्षरण से वायुमंडल की संरचना में बदलाव आ सकता है। ओजोन परत के पतले होने से, सूर्य की पराबैंगनी किरणें वायुमंडल में अधिक गहराई तक प्रवेश करती हैं, जो इस पराबैंगनी विकिरण को अवशोषित करने में असमर्थ वातावरण को और कमजोर बना सकता है।

- **निष्कर्ष:** ओजोन परत का क्षरण एक गंभीर पर्यावरणीय समस्या है, जिसके कारण मानव स्वास्थ्य, पर्यावरण, जलवायु और जैव विविधता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहे हैं। इसका मुख्य कारण CFCs जैसे रसायन हैं, जिनका उपयोग उद्योगों, घरेलू उत्पादों और अन्य क्षेत्रों में किया जाता है। हालांकि, मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल और जागरूकता अभियानों के माध्यम से ओजोन परत के संरक्षण में प्रगति हुई है, लेकिन यह एक निरंतर प्रयास है और हमें इसके प्रभावों को कम करने के लिए सभी स्तरों पर ध्यान देना आवश्यक है।

2. **Write short notes on any two of the following:**
(a) El-Nino effect on Indian monsoon.
(b) Indian monsoon and Tibet plateau.
(c) Western Disturbances in India.
निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए :
(a) एल-नीनो का भारतीय मानसून पर प्रभाव
(b) भारतीय मानसून एवं तिब्बत का पठार
(c) भारत में पश्चिमी विक्षोभ

उत्तर – (a)

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

एल-नीनो का भारतीय मानसून पर प्रभाव-

- **वर्षा में कमी (Reduced Rainfall):** एल-नीनो के दौरान, प्रशांत महासागर में समुद्र की सतह का तापमान अधिक बढ़ जाता है, जिससे समुद्र की हवाओं का प्रवाह प्रभावित होता है। इसका परिणाम यह होता है कि भारत में मानसून के दौरान सामान्य से कम वर्षा होती है। एल-नीनो की स्थिति में, भारतीय उपमहाद्वीप में विशेष रूप से पश्चिमी और मध्य भागों में बारिश कम होती है।
- **सामान्य मानसून की कमजोरता**: एल-नीनो की स्थिति में मानसून की सामान्य समान्य बारिश की तुलना में कम वर्षा होती है। यह खरीफ फसलों जैसे चावल, मक्का और दलहन की पैदावार को प्रभावित कर सकता है। इससे कृषि क्षेत्र को नुकसान होता है, क्योंकि भारत की अधिकांश कृषि वर्षा पर निर्भर होती है।
- **वर्षा वितरण में असमानता**: एल-नीनो के कारण वर्षा का वितरण असमान हो सकता है। जबकि कुछ स्थानों पर सूखा पड़ सकता है, वहीं कुछ क्षेत्रों में भारी वर्षा हो सकती है। विशेष रूप से, पश्चिमी भारत, गंगा के मैदानी इलाके, और उत्तर-पूर्वी भारत में सूखा पड़ने की संभावना अधिक होती है।
- **कृषि उत्पादन पर प्रभाव:** भारतीय कृषि मानसून पर अत्यधिक निर्भर करती है, और जब एल-नीनो के कारण वर्षा में कमी होती है, तो यह धान, गन्ना, मक्का, और अन्य प्रमुख फसलों के उत्पादन को प्रभावित कर सकता है। इसकी वजह से खाद्यान्न संकट उत्पन्न हो सकता है, जिससे खाद्य सुरक्षा पर संकट बढ़ सकता है।
- **जल स्रोतों पर प्रभाव**: वर्षा में कमी के कारण जलाशयों, नदी जलस्तर, और भविष्य में जल आपूर्ति में गिरावट हो सकती है। यह जल संसाधन पर नकारात्मक प्रभाव डालता है और देश में जल संकट की स्थिति उत्पन्न कर सकता है।
- **सूखा और अकाल**: एल-नीनो की स्थिति में सूखा और अकाल की स्थिति बन सकती है, विशेषकर उन क्षेत्रों में जहां पहले से ही पानी की कमी है। यह कृषि उत्पादन, निवासी जीवन और आर्थिक स्थिति पर दीर्घकालिक प्रभाव डालता है।
- **तापमान में वृद्धि**: एल-नीनो की घटना के दौरान, भारत में सामान्य तापमान में वृद्धि हो सकती है। इससे गर्मी की लहरें और अधिक तीव्र हो सकती हैं, जिससे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। उच्च तापमान के कारण जलवायु परिवर्तन की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है।

उत्तर – (b)

तिब्बत का पठार और भारतीय मानसून के बीच संबंध:

1. **मानसून की दिशा में परिवर्तन:** तिब्बत का पठार भारतीय मानसून के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मानसून की हवाएँ मुख्य रूप से दक्षिण-पश्चिम से भारत की ओर आती हैं, और तिब्बत का पठार इन हवाओं की दिशा को प्रभावित करता है। गर्मियों में, जब हिमालय और तिब्बत का पठार अत्यधिक गर्म होते हैं, तो यह हवा का दबाव कम करता है, जो दक्षिण से आ रही मानसून हवाओं को भारत की ओर खींचता है। इससे मानसून की हवाएँ भारत की ओर बढ़ती हैं, जिससे वर्षा का आरंभ होता है।
2. **हवा का दबाव :** तिब्बत का पठार गर्मियों में अत्यधिक गर्म होने की वजह से एक कम दबाव क्षेत्र उत्पन्न करता है। इस कम दबाव क्षेत्र के कारण, दक्षिण-पश्चिम मानसूनी हवाएँ तिब्बत से भारत की ओर आकर्षित होती हैं। यह प्रभाव मानसून की पूर्व-मध्य और उत्तर भारत में वर्षा के पैटर्न को निर्धारित करता है।
3. **तापमान में असमानता :** तिब्बत का पठार गर्मियों में बहुत गर्म हो जाता है, जबकि भारत के दक्षिणी भाग में अपेक्षाकृत अधिक आर्द्रता और गर्मी होती है। इस तापमान के अंतर के कारण, पठार से उच्च दबाव बनता है जो मानसून की हवाओं को भारतीय उपमहाद्वीप की ओर खींचता है। इसका परिणाम यह होता है कि मानसून की हवाएँ पश्चिमी और मध्य भारत में अधिक प्रभावी होती हैं।
4. **संवहन और वर्षा**: तिब्बत का पठार और भारत के बीच संवहन और वायुवेग के कारण मानसून की हवाएँ भारतीय उपमहाद्वीप में और विशेष रूप से उत्तर भारत, पूर्वी भारत और कर्नाटका में भारी वर्षा लाती हैं। जब मानसून की हवाएँ तिब्बत के पठार से टकराती हैं, तो इससे आवर्तक वायुरचना उत्पन्न होती हैं, जो बादलों का निर्माण करती हैं और फिर वर्षा होती है।
5. **पठार की ऊँचाई और हवाओं के मार्ग में रुकावट:** तिब्बत का पठार ऊँचा होने के कारण, यह मानसून हवाओं के मार्ग में एक प्राकृतिक अवरोध उत्पन्न करता है। इसलिए, जब मानसून हवाएँ तिब्बत के पठार तक पहुँचती हैं, तो हवाओं का तापमान और आर्द्रता में परिवर्तन होता है, जिससे हवाएँ भारत के उत्तरी भागों में अधिक प्रभावी होती हैं, लेकिन भारत के दक्षिणी भागों में हल्की वर्षा हो सकती है।

उत्तर- (c)

भारत में पश्चिमी विक्षोभ-

- पश्चिमी विक्षोभ की उत्पत्ति मुख्य रूप से **भूमध्य सागर** और **कैस्पियन सागर** के पास होती है। ये विक्षोभ समुद्रों से उत्पन्न होने वाली आर्द्र हवाओं और पश्चिमी दिशा से आने वाली ठंडी हवाओं का मिश्रण होते हैं, जो हिमालय के पास पहुंचकर उच्च दबाव क्षेत्र उत्पन्न करते हैं। इस कारण बर्फबारी, वर्षा और तूफान जैसी घटनाएँ होती हैं।
- **पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव:**
  1. **वर्षा और बर्फबारी:** पश्चिमी विक्षोभ उत्तर भारत और हिमालयी क्षेत्र में वर्षा और बर्फबारी का प्रमुख कारण बनता है। खासकर जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और उत्तर भारत के कुछ हिस्सों में इसे महत्वपूर्ण माना जाता है। यह विशेषकर सर्दियों में बर्फबारी और हल्की बारिश का कारण बनता है, जो पहाड़ी क्षेत्रों में सर्दी और हिमपात को बढ़ाता है।
  2. **तापमान में गिरावट:** जब पश्चिमी विक्षोभ भारत में आता है, तो यह तापमान को अचानक गिरा सकता है। विशेष रूप से उत्तर भारत के मैदानी क्षेत्रों में यह ठंड का कारण बनता है और वहां शीत लहर का खतरा बढ़ जाता है।
  3. **कृषि पर प्रभाव:** पश्चिमी विक्षोभ से उत्पन्न होने वाली बारिश और बर्फबारी कृषि के लिए लाभकारी हो सकती है, क्योंकि यह खरीफ फसल के लिए आवश्यक जल आपूर्ति को सुनिश्चित करता है। हालांकि, अत्यधिक बर्फबारी और वर्षा से फसलें प्रभावित भी हो सकती हैं, खासकर अगर फसल पकने के दौर में हो।
  4. **वायु गुणवत्ता पर प्रभाव:** पश्चिमी विक्षोभ वायुमंडल में आर्द्रता और ठंडी हवाएँ लाता है, जो वायु प्रदूषण को कुछ हद तक कम कर सकता है। यह हवा में मौजूद धूल और प्रदूषकों को नीचे की ओर लाकर उन्हें हटाता है, जिससे वायु गुणवत्ता में सुधार हो सकता है।
  5. **अचानक मौसम परिवर्तन:** पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव से मौसम में अचानक बदलाव होता है। जब यह विक्षोभ भारत में प्रवेश करता है, तो यह अचानक गर्मी से ठंड और आर्द्रता की स्थिति उत्पन्न करता है, जिससे लोग मौसम के बदलाव से प्रभावित होते हैं।

3. Discuss the impact of physiography and climate on population distribution of Rajasthan.

राजस्थान के जनसंख्या वितरण पर भू-आकृति एवं जलवायु के प्रभावों का विवेचन कीजिए।

उत्तर- राजस्थान के जनसंख्या वितरण-

- राजस्थान भारत का एक विशाल और विविधतापूर्ण राज्य है, जो अपनी विशेष भू-आकृति और जलवायु के लिए जाना जाता है। राज्य के जनसंख्या वितरण पर इन दोनों कारकों का गहरा प्रभाव पड़ता है। राजस्थान की भू-आकृति और जलवायु इसके विभिन्न हिस्सों में जनसंख्या के निवास स्थान और घनत्व को प्रभावित करती हैं।
- राजस्थान में जनसंख्या वितरण पर भू-आकृति और जलवायु का गहरा प्रभाव है। थार मरुस्थल की शुष्क और गर्म जलवायु के कारण वहाँ जनसंख्या घनत्व कम है, जबकि अरावली पर्वत और गंगनहर क्षेत्र में जलवायु और जल स्रोतों की अधिकता के कारण जनसंख्या घनत्व अधिक है। इसके अलावा, सिंचाई परियोजनाओं और कृषि आधारित उद्योगों के कारण कुछ क्षेत्रों में जनसंख्या में वृद्धि देखी जाती है। कुल मिलाकर, राजस्थान में जनसंख्या का वितरण भू-आकृति और जलवायु की विशेषताओं के आधार पर असमान रूप से होता है।
- **जनसंख्या के वितरण को प्रभावित करने वाले कारक निम्न प्रकार हैं-**
  1. **धरातलीय संरचना -** समतल मैदानी भाग पठारी तो था भूतल की अपेक्षा घने बसे होते हैं। क्योंकि यहां उत्तम जलवायु व कृषि की सुविधाएं, परिवहन सुविधा और व्यापारिक सुविधा अधिक होती है
  2. **जलवायु -** समशीतोष्ण जलवायु एवं उपयुक्त वर्षा वाले क्षेत्र में जनसंख्या सघन होते हैं इसके विपरीत अत्याधिक ठंडी एवं शुष्क जलवायु क्षेत्रों में जनसंख्या सीमित होती है।
  3. **वर्षा –** उपजाऊ मिट्टी के साथ वर्षा और धरातल दोनों मिलकर जनसंख्या घनत्व को निर्धारित करते हैं।
     राजस्थान में जनसंख्या घनत्व पश्चिम से पूर्व की ओर तथा दक्षिण-पश्चिम से उत्तर पूर्व की ओर बढ़ता है। क्योंकि पश्चिम में वर्षा की मात्रा कम है तथा पूर्वी भाग में वर्षा की मात्रा अधिक है।
  4. **मिट्टी का उपजाऊपन -** जहां की मिट्टी उपजाऊ होती है वहां मनुष्य को भोजन, वस्त्र, आवास आदि की सुविधाएं प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हो जाती है। इसीलिए उपजाऊ मिट्टी वाले भूभाग घने बसे होते हैं इसके विपरीत जहां की मिट्टी कम उपजाऊ होती है वहां कम जनसंख्या पाई जाती है।
  5. **जलापूर्ति -** जिन भू-भागों में पर्याप्त उपलब्ध जल होते हैं वह सघन बसे होते हैं। इसके विपरीत शुष्क एवं जल आभा वाले क्षेत्रों में जनसंख्या कम निवास करती है।

2024

1. **रूस-यूक्रेन संघर्ष की पृष्ठभूमि के भू-राजनीतिक कारकों की विवेचना कीजिए।**

उत्तर-

- यूक्रेन पूर्व सोवियत संघ का प्रमुख गणराज्य था; वर्ष 1991 में सोवियत संघ टूटने के बाद स्वतंत्र हुआ।
- रूस यूक्रेन को अपनी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं सामरिक परंपरा से जुड़ा मानता है।
- यूक्रेन की पश्चिमी बहुलता/संस्कृति और रूसी भाषी अल्पसंख्यक का मुद्दा तनाव का स्रोत है।

क्षेत्रीय सुरक्षा व रणनीतिक हित-

- क्रीमिया (Crimea) क्षेत्र का रूस द्वारा 2014 में अधिग्रहण—यह काला सागर में महत्त्वपूर्ण नौसैनिक एवं रणनीतिक आधार है।
- रूस, यूक्रेन की नाटो (NATO) सदस्यता की संभावनाओं को अपनी सुरक्षा के लिए खतरे के रूप में देखता है।
- पूर्वी यूक्रेन (डोनबास, लुहांस्क, डोनेट्स्क) में रूसी भाषी विद्रोहियों को रूस की राजनीतिक/सैन्य सहायता।

पश्चिमी देशों की संलिप्तता-

- अमेरिका एवं यूरोपीय संघ, यूक्रेन के लोकतांत्रिक व पश्चिमी झुकाव का समर्थन करते हैं, तथा रूस-विरोधी प्रतिबंध लगाते रहे हैं।
- रूस नाटो के विस्तार को "रिंग ऑफ कंटेनमेंट" की तरह मानता है, जिससे उसकी शक्ति/राजनीतिक प्रभाव सीमित होता है।

ऊर्जा/प्राकृतिक संसाधन-

- यूक्रेन रूस-यूरोप के बीच ऊर्जा (गैस, तेल) पाइपलाइनों का प्रमुख मार्ग है; क्षेत्रीय नियंत्रण से रूस को ऊर्जा व्यापारिक लाभ मिलता है।
- काला सागर तट, खनिज संसाधन, औद्योगिक क्षेत्र - सामरिक और आर्थिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण।

भू-राजनीतिक प्रभाव और प्रभुत्व-

- रूस का उद्देश्य पूर्वी यूरोप में अपना प्रभाव बरकरार रखना, पश्चिमी विस्तार/संघर्ष से अपनी सीमाओं की सुरक्षा।
- यूक्रेन पर प्रभुत्व, रूस को काला सागर व भूमध्यसागर में नौसैनिक रणनीति, तथा मध्य एशिया–यूरोप संवाद/अर्थव्यवस्था में बढ़त देता है।

अंतरराष्ट्रीय कानून और शक्ति संतुलन-

- क्रीमिया के अधिग्रहण और डोनबास क्षेत्र की स्थिति अंतरराष्ट्रीय कानून/संयुक्त राष्ट्र नियमों के उल्लंघन के आरोप पर आधारित।
- भारत सहित अधिकांश विकासशील देश तटस्थ रह कर राजनयिक संतुलन साधते हैं।

निष्कर्ष:

- रूस–यूक्रेन संघर्ष के पीछे ऐतिहासिक संबंध, रणनीतिक-सुरक्षा हित, पश्चिमी देशों की भूमिका, ऊर्जा-संपदा, तथा क्षेत्रीय प्रभुत्व के भू-राजनीतिक कारक प्रमुख हैं। यह संघर्ष वैश्विक शक्ति संतुलन, ऊर्जा आपूर्ति व्यवस्था और अंतरराष्ट्रीय राजनीति के बदलते परिदृश्य को भी दर्शाता है।

2. **हिमालयी एवं प्रायद्वीपीय नदियों के अन्तर की निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत विवेचना कीजिए:**
   उद्भव स्थल, प्रवाह की प्रकृति, अपवाह का प्रकार, नदी की प्रकृति एवं जलग्रहण क्षेत्र।

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

उत्तर-

– हिमालयी और प्रायद्वीपीय नदियाँ भारतीय अपवाह तंत्र के दो प्रमुख भाग हैं। ये नदियाँ भूवैज्ञानिक संरचना, जलवायु और उत्थान की प्रक्रियाओं में भिन्नता के कारण एक-दूसरे से महत्त्वपूर्ण रूप से भिन्न हैं।

निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत दोनों के बीच के अंतर की विवेचना की गई है:

उद्भव स्थल (Source of Origin)-

विशेषता	हिमालयी नदियाँ (Himalayan Rivers)	प्रायद्वीपीय नदियाँ (Peninsular Rivers)
उद्भव स्थल	हिमालय पर्वत की ऊँची चोटियाँ, हिमनद (Glaciers) और झीलें।	प्रायद्वीपीय पठार की पहाड़ियाँ और पठार (जैसे पश्चिमी घाट, विंध्य)।
उदाहरण	गंगा, सिंधु, ब्रह्मपुत्र और उनकी सहायक नदियाँ।	गोदावरी, कृष्णा, कावेरी, महानदी, नर्मदा, तापी।

प्रवाह की प्रकृति (Nature of Flow)-

विशेषता	हिमालयी नदियाँ	प्रायद्वीपीय नदियाँ
जल स्रोत	सदावाहिनी (Perennial) – वर्षभर जल से भरी रहती हैं। इन्हें दोहरे जल स्रोत (Double source) से जल प्राप्त होता है: वर्षा और हिम/हिमनद का पिघला हुआ जल।	मौसमी (Seasonal) या अनित्यवाहिनी – मुख्य रूप से वर्षा पर निर्भर होती हैं। शुष्क ऋतु में इनका जल प्रवाह बहुत कम हो जाता है या रुक जाता है।

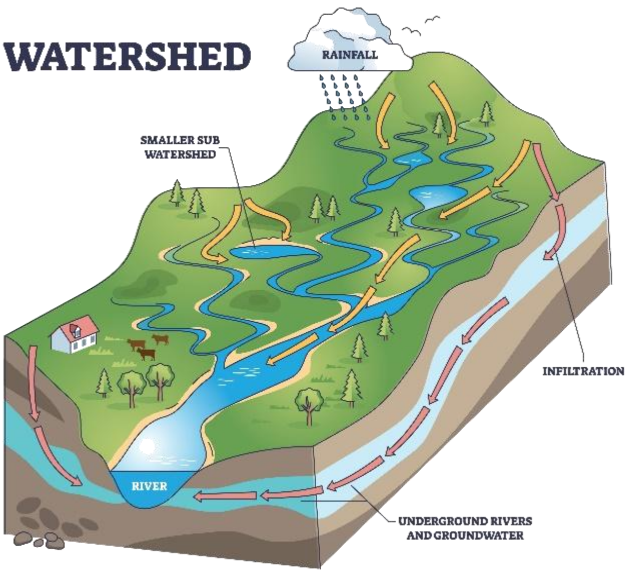

अपवाह का प्रकार (Type of Drainage)-

विशेषता	हिमालयी नदियाँ	प्रायद्वीपीय नदियाँ
जल निकासी	ये पूर्ववर्ती अपवाह (Antecedent Drainage) का उदाहरण हैं, अर्थात ये हिमालय के उत्थान से पहले से ही प्रवाहित हो रही हैं।	ये अनुवर्ती (Subsequent) या अध्यारोपित (Superimposed) अपवाह का उदाहरण हैं। नर्मदा और तापी को छोड़कर, अधिकांश नदियाँ पश्चिम से पूर्व की ओर बहती हैं।
मार्ग	विसर्पण (Meanders), बाढ़ के मैदान और डेल्टा का निर्माण करती हैं। इनके मार्ग बार-बार बदलते रहते हैं।	ये सामान्यतः सीधे और सुनिश्चित मार्ग पर प्रवाहित होती हैं।

नदी की प्रकृति (Nature of River)-

विशेषता	हिमालयी नदियाँ	प्रायद्वीपीय नदियाँ
उम्र एवं क्रिया	ये युवा नदियाँ हैं। ये अपनी घाटी को गहरा करती हैं, गहरी V-आकार की घाटियाँ (Gorges), गहरे खड्ड (Canyons) और जलप्रपात बनाती हैं।	ये वृद्ध नदियाँ हैं, जो अपने आधार तल (Base level) को पहले ही प्राप्त कर चुकी हैं। ये मुख्य रूप से पार्श्व अपरदन (Lateral erosion) करती हैं।
लंबाई	लंबी होती हैं और मैदानी क्षेत्रों में विशाल दूरियाँ तय करती हैं।	छोटी और अपेक्षाकृत कम लंबाई की होती हैं।
ढाल (Gradient)	इनका ढाल (Slope) तेज़ होता है, खासकर ऊपरी क्षेत्रों में।	इनका ढाल मंद होता है।
डेल्टा/ज्वारनदमुख	ये विशाल डेल्टा बनाती हैं (जैसे गंगा-ब्रह्मपुत्र डेल्टा)।	अधिकांश नदियाँ डेल्टा बनाती हैं, लेकिन नर्मदा और तापी (पश्चिम की ओर बहने वाली) ज्वारनदमुख (Estuaries) बनाती हैं।

जलग्रहण क्षेत्र (Catchment Area)-

विशेषता	हिमालयी नदियाँ	प्रायद्वीपीय नदियाँ
आकार	इनका जलग्रहण क्षेत्र विशाल होता है, जो कई राज्यों/देशों तक फैला होता है।	इनका जलग्रहण क्षेत्र अपेक्षाकृत छोटा होता है।
उदाहरण	गंगा और सिंधु नदी प्रणालियों का अपवाह तंत्र अत्यंत विस्तृत है।	गोदावरी, कृष्णा जैसी नदियों का जलग्रहण क्षेत्र हिमालयी नदियों की तुलना में सीमित है।

– हिमालयी और प्रायद्वीपीय नदियों में उत्पत्ति, प्रवाह, अपवाह एवं क्षेत्रीय विस्तार के आधार पर उल्लेखनीय भौगोलिक भिन्नता है। ये अंतर भारतीय नदी-तंत्र की विविधता एवं जलवायु क्षेत्रों के स्वरूप को दर्शाते हैं।

3. राजस्थान में सहरिया जनजाति के आवास, अर्थव्यवस्था तथा समाज का वर्णन कीजिए एवं सहरिया जनजाति के उत्थान के लिए सरकार की नीतियों की विवेचना कीजिए।

उत्तर-

– राजस्थान की सहरिया जनजाति, जिसे आदिम जनजाति समूह (Particularly Vulnerable Tribal Group - PVTG) का दर्जा प्राप्त है, मुख्य रूप से बारां जिले की किशनगंज और शाहबाद तहसीलों में निवास करती है। सहरिया शब्द का अर्थ 'जंगल' होता है, जो वन पर आधारित इनके जीवन को दर्शाता है।

सहरिया जनजाति: आवास, अर्थव्यवस्था और समाज-

– सहरिया जनजाति का जीवन अपनी परंपराओं और वन-आधारित संस्कृति के कारण अत्यंत विशिष्ट है, लेकिन इनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति अत्यधिक दयनीय रही है।

1. आवास और रहन-सहन (Housing and Habitation)-

- **बस्ती (सहाराना):** सहरिया जनजाति की बस्ती को सहाराना कहा जाता है। ये बस्तियाँ आमतौर पर घने जंगल या दुर्गम क्षेत्रों में, अन्य जातियों से अलग, एकांत में बसी होती हैं।
- **घर (टापरी):** इनके घर मिट्टी, पत्थर, लकड़ी और घास-फूस के बने होते हैं, जिन्हें टापरी कहा जाता है। ये सामान्यत: मचाननुमा (पेड़ों पर बनी झोपड़ी) या गोलाकार/चौकोर झोंपड़ियाँ होती हैं।
- **सामुदायिक स्थल (हथाई या बंगला):** प्रत्येक सहाराना के बीच में एक सामुदायिक छतरीनुमा झोंपड़ी या ढालिया बनाया जाता है जिसे हथाई या बंगला कहते हैं। यह सामाजिक और पंचायत बैठकों का केंद्र होता है।
- **सामाजिक संगठन:** गाँव के समूह को सहरोल और घरों के समूह को थोक कहते हैं। मुखिया को पटेल या प्रधान कहा जाता है।

2. अर्थव्यवस्था -

सहरिया जनजाति की अर्थव्यवस्था प्राचीन, निर्वाह-आधारित और मुख्य रूप से वन उत्पादों पर निर्भर रही है:

- **वन उत्पाद संग्रहण:** इनकी जीविका का पारंपरिक आधार जंगल से लघु वन उपज जैसे कत्था, गोंद, शहद, लाख, मूसली और तेंदू पत्ता आदि एकत्र करना और उन्हें बेचना रहा है।
- **जड़ी-बूटियों का ज्ञान:** इन्हें जड़ी-बूटियों का गहरा ज्ञान है, जिसका उपयोग वे परंपरागत रूप से करते रहे हैं, लेकिन इन्हें बेचने में वे शोषण का शिकार होते हैं।
- **कृषि और मजदूरी:** वन पर निर्भरता कम होने और शोषण बढ़ने के कारण वर्तमान में अधिकांश सहरिया लोग आदिम परम्परागत खेती करते हैं या खेतिहर मजदूर (Casual Labor) के रूप में काम करते हैं।
- **आर्थिक विपन्नता:** भूमिहीनता, निम्न कृषि उपज, और शोषण के कारण इनका जीवन स्तर अत्यंत साधारण और दयनीय बना हुआ है।

3. सामाजिक जीवन -

- विवाह: सहरिया गाँव सामान्यतया बहिर्विवाही होते हैं।
- वस्त्र: पुरुष धोती (जिसे पंचा कहते हैं), कमीज और अंगरखी पहनते हैं, जबकि महिलाएँ रेजा धारण करती हैं।
- सांस्कृतिक पहलू:
- ये लापसी (विशेष अवसरों पर) और माँस दोनों का सेवन करते हैं।
- इनका प्रमुख लोक नृत्य लहंगी नृत्य और दुल-दुल घोड़ी नृत्य है।
- ये सीताबाड़ी (बारां) के मेले को अपना सबसे बड़ा तीर्थ मानते हैं।

सहरिया जनजाति के उत्थान के लिए सरकारी नीतियाँ -

– सहरिया जनजाति राजस्थान की एकमात्र आदिम जनजाति (PVTG) है, इसलिए इनकी स्थिति को सुधारने के लिए केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा विशेष नीतियाँ और योजनाएँ क्रियान्वित की जा रही हैं:

1. आवास और आधारभूत संरचना-

- सहरिया बंगला निर्माण: राज्य सरकार द्वारा विशेष रूप से सहरिया परिवारों को स्थायी आवास उपलब्ध कराने के लिए यह योजना चलाई जाती है।
- प्रधानमंत्री आवास योजना (PM-AY): इस योजना के तहत भी सहरिया परिवारों को पक्के मकान बनाने के लिए वित्तीय सहायता दी जाती है।
- PM-JANMAN (प्रधानमंत्री जनजाति आदिवासी न्याय महा अभियान): 2023 में शुरू की गई इस राष्ट्रीय योजना का लक्ष्य PVTG, जिसमें सहरिया भी शामिल हैं, की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार करना है। इसमें आवास, सड़क, स्वच्छ पेयजल और स्वास्थ्य जैसी 11 महत्त्वपूर्ण सेवाओं पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

2. आजीविका और रोजगार-

- अतिरिक्त रोज़गार: सहरिया परिवारों को मनरेगा (MGNREGA) के तहत 100 दिन का अतिरिक्त (कुल 200 दिन तक) सुनिश्चित रोज़गार प्रदान किया जाता है ताकि उनकी आय में वृद्धि हो सके।
- स्वरोजगार योजनाएं: कौशल विकास प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है ताकि वे वनोत्पाद आधारित छोटे उद्योगों या अन्य व्यवसायों में संलग्न हो सकें।
- घी-तेल एवं दाल वितरण: राज्य सरकार द्वारा सहरिया परिवारों को खाद्य सुरक्षा और पोषण सुनिश्चित करने के लिए घी, तेल और दाल का विशेष वितरण किया जाता है।

3. शिक्षा और सामाजिक सुरक्षा-

- छात्रवृत्ति योजनाएँ: प्री-मैट्रिक और पोस्ट-मैट्रिक छात्रवृत्ति योजनाओं के माध्यम से सहरिया छात्रों को शिक्षा के लिए आर्थिक सहायता दी जाती है।
- आवासीय विद्यालय (EMRS): एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय (EMRS) जैसी योजनाएँ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए संचालित हैं।
- प्रतियोगी परीक्षा कोचिंग: सरकारी भर्ती परीक्षाओं की तैयारी के लिए सहरिया छात्रों को विशेष कोचिंग सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं।
- जनजाति भागीदारी योजना: इस योजना के तहत जनजातीय समुदाय की आवश्यकताओं के अनुरूप कार्य (जैसे सामुदायिक संपत्ति निर्माण, कौशल प्रशिक्षण) करवाए जाते हैं, जिसमें समुदाय का कम से कम 50% भाग जनजाति का होना आवश्यक है।

❑❑❑

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119